



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सामाज्यमाहु तस्स जं,
जो अप्पाण भए ण दंसए।

जो भय से विचलित नहीं
होता, उस साधक के
सामायिक होता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 22 • 6 - 12 मार्च, 2023



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 04-03-2023 • पेज : 12 • ₹ 10

हम धर्म की रक्षा करेंगे तो धर्म भी हमारी रक्षा करेगा : आचार्यश्री महाश्रमण

बाडोली, २५ फरवरी, २०२३

तीर्थकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १२ किलोमीटर का विहार कर अपनी धवल सेना के साथ बाडोली ग्राम पधारे। परम पावन ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि चार प्रकार की आत्माएँ होती हैं—परमात्मा, महात्मा, सदात्मा और दुरात्मा।

परमात्मा तो जो आत्माएँ परम अवस्था को प्राप्त हो गई हैं और सिद्ध-मुक्त होकर मोक्ष में विराजमान हो गई हैं। संसारी आत्माएँ जो हैं, उनमें शेष तीन आत्माएँ होती हैं। जिनके मन, वचन और शरीर में एकरूपता होती है, सरलता होती है जो त्यागी-तपस्वी साधु-संत पुरुष लोग हैं, वे महात्मा होते हैं।

जो साधु तो नहीं हैं लेकिन सज्जन लोग हैं और सदाचारी, अच्छे-भले आदमी हैं। जिनके जीवन में नैतिकता-ईमानदारी है, वे सदात्मा होते हैं। जिनके मन में कुछ, वाणी में कुछ और करते कुछ हैं, कथनी-करनी में असमानता रहती है। छल-कपट-झूठ का ज्यादा प्रयोग करने वाले, जो हिंसा के कार्यों में लगे रहते हैं, वे दुरात्मा हैं।

अगर दुनिया में सज्जन आदमी मिल



सकते हैं, तो दुर्जन आदमी भी मिल सकते हैं। आचरण से सज्जन, दुर्जन का पता लग सकता है। दुर्जन विद्या-ज्ञान का उपयोग विवाद में करता है। सज्जन के पास विद्या है, तो वह दूसरों को ज्ञान देकर अपने ज्ञान को बढ़ाएगा। दुर्जन के पास धन है, तो वह धन का घमंड करेगा। सज्जन के पास धन है, तो वह घमंड नहीं दान करेगा।

दुर्जन के पास शक्ति-ताकत है तो वह दूसरों को तकलीफ देगा। सज्जन के पास शक्ति है तो वह किसी की सेवा-रक्षा

करेगा और परोपकार करेगा। दुनिया में सारे सदात्मा बनें, दुरात्मा न बनें। दुरात्मा तो खुद का नुकसान कर लेती है। एक आदमी किसी का गला काट देता है, वो इतना नुकसान हमारा नहीं करता जितना नुकसान खुद की दुरात्मा कर देती है।

जो निर्दयी, निष्ठुर और सदाचरणविहीन है, जब मौत आती है, तब वह पश्चाताप करता है कि अब तो मौत आ गई, अब मेरा क्या होगा? मैंने नरक की बात सुनी है, मैंने जिंदगी में पाप बहुत

किए हैं। अब मुझे नरक में जाना पड़ेगा। गृहस्थ सदात्मा बनें, बड़े-बड़े पापों से तो बचने का प्रयास करें।

धर्म ऐसा तत्त्व है, जो हमारी आत्मा को दुरात्मा बनने से बचा सकता है। हमारी अणुव्रत यात्रा चल रही है। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जीवन में आ जाते हैं, तो गृहस्थों की आत्मा दुरात्मा बनने से बच सकती है। दुनिया में आध्यात्मिकता आज भी है, वह तो अमर है। धर्म कभी मरता नहीं है। धर्म है तभी दुनिया चल रही है।

अणुव्रत एक दीप-शिखा है। सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति को हम समझाकर गृहस्थों को अणुव्रत स्वीकार करा रहे हैं। गृहस्थ सदात्मा बनें और धर्म जीवन में आ जाए। धर्म के दो प्रकार हैं—उपासनात्मक व आचरणात्मक। धर्म आचरण में आए तो हमारी रक्षा करे, यह एक प्रसंग से समझाया। हम धर्म की रक्षा करेंगे तो धर्म भी हमारी जीवन में रक्षा कर सकेगा।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि इस लोक में चंदन शीतल होता है। चंदन से भी अधिक शीतल चंद्रमा होता है। चंद्रमा से भी शीतल साधु की संगति होती है। भारतीय संस्कृति में ऋषियों-मुनियों को सम्मान दिया गया है। जैन परंपरा में भी आचार्यों, साधु-संतों को महत्त्व दिया जाता है, क्योंकि उनसे हमें शीतलता की अनुभूति होती है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में नीतेश श्रीश्रीमाल, आर्या डूंगरवाल, राकेश बावड़िया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। महिला मंडल, तेयुप द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। ज्ञानशाला, कन्या मंडल, बहुमंडल ने भावनाएँ व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

लाभ होने पर भी लोभ को बढ़ने न दें : आचार्यश्री महाश्रमण

हिम्मतनगर, २८ फरवरी, २०२३

अमृत पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः विहार कर उत्तर गुजरात के प्रमुख शहर हिम्मतनगर पधारे। परम पावन ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के अंदर अनेक वृत्तियाँ होती हैं। उनमें से एक दुर्वृत्ति होती है—लोभ। लोभ की वृत्ति के कारण आदमी में लालसा का भाव, तृष्णा, आकांक्षा, कामना, आसक्ति ये भाव उभरते रहते हैं।

लोभ की वृत्ति बहुत कमजोर पड़ जाए तो फिर उभरने का क्रम न भी रहे, पर भीतर में उसका अस्तित्व रहता है। अपराधों की पृष्ठभूमि में एक बड़ा कारण लोभ की वृत्ति भी हो सकती है। लोभ पर कंट्रोल करना बहुत उच्च कोटि की साधना है। लोभ तो दुर्जेय है। दसवें गुणस्थान तक इसका अस्तित्व रहता है।

आदमी को जब लाभ होता है, तब लाभ के साथ लोभ बढ़ जाता है। संतोष धारण करना सीख ले तो बड़ा सुख-शांति रहती है। संतोष आते ही लोभ की प्रवृत्ति प्रतनु हो जाती है। यह एक प्रसंग से समझाया कि दिशा बदली तो दशा भी बदल जाती है। परम तत्त्व पाने की दिशा में आदमी आगे बढ़ सकता है।

लाभ होने पर भी लोभ को बढ़ने न दें। संतोष की वृद्धि हो तो परम सुख की प्राप्ति हो सकती है। आज हिम्मतनगर आए हैं। हमारे में हिम्मत ऐसी जागे कि निर्भयता का भाव पुष्ट हो जाए। हम अणुव्रत यात्रा कर रहे हैं। सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति की बात बता रहे हैं। अणुव्रत का संकल्प पुष्ट हो तो लोभ की चेतना पर चोट हो सकती है। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम अच्छे हैं। यहाँ के लोगों में आध्यात्मिक हिम्मत का विकास होता रहे।

(शेष पृष्ठ दो पर)





त्याग की चेतना को पुष्ट करने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण



वक्तापुर, साबरकांठा, २७ फरवरी, २३
जिनशासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १६

किलोमीटर का विहार कर वक्तापुर में स्थित ओम चिंतामणि पार्श्व-पद्मावती जैन तीर्थ में पधारे। पूज्यप्रवर ने पावन

देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में भोग चलता है, योग भी चलता है। जो भोग पदार्थ, तत्त्व और काम है, वे एक शक्य है। काम-भोग विष के समान है। इन काम भोगों की जो भीतर से अभिलाषा रखता है, तो वह भी दुर्गति का कारण बन सकता है।

त्याग के मार्ग में ऊपर से भी त्याग होना चाहिए और भीतर में भी त्याग होना चाहिए। मन में त्याग के भाव का प्रवाह हो तो एक अच्छी स्थिति बन सकती है। तीन करण तीन योग से त्याग हो। ये तो बहुत ऊँची बात है। जितना त्याग करें, उतना अच्छा है। धर्म के मार्ग में मन, वचन और काय का भी महत्त्व है।

साधारणतया आदमी छः कोटि की सामायिक करते हैं पर यदि सामायिक आठ या नौ कोटि की कर लें तो वह उच्च कोटि की सामायिक हो जाती है। इस प्रकार श्रावक की तीन प्रकार की सामायिक हो जाती है। सामायिक का अपना महत्त्व है। पुणिया श्रावक और राजा श्रेणिक के प्रसंग से सामायिक का महत्त्व समझाया। धर्म को बेचा नहीं जा सकता है। सामायिक तो अमूल्य है।

सिद्धांततः मान्य है कि श्रावक तीन करण तीन योग से नौ कोटि की सामायिक भी कर सकता है। पर वह साधु के त्याग के बराबर नहीं कर सकता है। साधु के त्याग

में कोई आगार नहीं है, निरपेक्ष है। श्रावक के त्याग सापेक्ष है। इसलिए साधु अणगार है, संबंधों से उपरत है। गृहस्थ संबंधों की दुनिया में रहता है। साधु संयोग विप्रमुक्त रहे। साधु अनिकेत है, भिक्षु है।

साधु तो भिक्षा माँगने का अधिकारी होता है पर गृहस्थ के लिए भिक्षा माँगना गौरव की बात नहीं है। संसार के जो काम भोग है, इनसे भीतर से भी विरक्ति हो जाए वो बड़ा त्याग हो सकता है। हम सबमें त्याग की चेतना पुष्ट हो। गृहस्थ त्याग में जितना बढ़ सके, बढ़ाने का प्रयास करे, यह काम्य है।

रोगमुक्त बनने के लिए योग साधना अपेक्षित : आचार्यश्री महाश्रमण

इडर, २६ फरवरी, २०२३

महासंकल्प बली आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १२ किलोमीटर का विहार कर इडर पधारे। इडर के पाटीदार पटेल समाज के लोग भी तेरापंथ में आस्था रखते हैं। यहाँ पर जैन समाज के काफी परिवार हैं। पूज्यप्रवर का प्रवास श्यामनगर में राजेश खमेसरा के यहाँ हुआ।

शांतिदूत ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि तीन शब्द हैं—योग, रोग और भोग। हमारी दुनिया में प्राणी-मनुष्य होते हैं, उनके जीवन में पदार्थों का भोग भी चलता है। कई बार शरीर या मन में रोग भी पैदा हो जाता है। भावात्मक रोग भी हो जाते हैं।

प्रश्न उठता है कि इन मानसिक, शारीरिक या भावनात्मक रोगों से छुटकारा कैसे मिले? भोग की अत्यधिकता या आसक्तिपूर्ण भोग ये रोगों के कारण बनते हैं। रोगमुक्त बनना है तो उसके लिए योग

की आराधना-साधना अपेक्षित है। योग साधना करना है तो भोग पर भी कंट्रोल करना अपेक्षित होता है।

मोक्ष का जो उपाय है, वह योग है। वह सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन और सम्यग् चारित्र्य के रूप में है। आसन-प्राणायाम को भी योगयोग कहा जा सकता है। इसका अपना महत्त्व हो सकता है। जैन पद्धति में काम-क्लेश एक निर्जरा का प्रकार है। प्रेक्षाध्यान साधना में आसन-प्राणायाम, दीर्घश्वास ये चीजें हैं। पर योग बहुत विस्तृत चीज भी है।

धर्म की सारी की सारी साधना योग है। हमें मोक्ष से जोड़ने वाला धर्म का व्यापार-प्रवृत्तियाँ योग हैं। योग जोड़ने वाला तत्त्व है। पदार्थ के उपभोग और उपयोग में अंतर है। उपभोग आसक्ति के साथ होता है, उपयोग आवश्यकतानुसार होता है। उसमें आसक्ति नहीं है। साधु पदार्थों का उपयोग करे, उपभोग न करे। भोग समस्या-समर्थक हो सकता है।

नशा करना बुरी आदत है। भोग क्या भोगें, भोगों ने हमें भोग लिया। काल क्या बीता, हम खुद बीत गए। तप नहीं तपा हम खुद संतप्त हो गए। तृष्णा-लालसा बुढ़ी नहीं हुई पर आदमी बुढ़ा हो गया। आदमी सर्व दुःख और रोग-मुक्त होता है तो आदमी योग की साधना करे, त्याग-संयम के पथ पर चले। राग के समान दुःख नहीं और त्याग के समान कोई सुख नहीं होता है।

जो आनंद गृहस्थों को नहीं मिलता है, हो सकता है, वो आनंद साधु के हो, कारण है कि साधु परिग्रहमुक्त है, त्याग है और राग से दूर है। गृहस्थ भी त्याग-संयम के पथ पर चले। गृहस्थ परिग्रह की सीमा करें। भोग-पदार्थों का संयम करें। हिंसा की सीमा करे। साधु तो सर्व हिंसा के त्यागी होते हैं। गृहस्थ अणुव्रत का मार्ग स्वीकार करे। छोटे-छोटे अच्छे नियम गृहस्थ के जीवन में आएँ तो जीवन अच्छा बन सकता है।

साधु ने तो परम को पाने के लिए थोड़े से गृहस्थ जीवन को छोड़ा; पर गृहस्थ थोड़े से सुखों के लिए परम सुख को छोड़ देते हैं। हम परम पर ध्यान दें। दीर्घ को देखो, थोड़े को मत देखो। गृहस्थ के जैसे-जैसे उम्र बढ़े वह त्याग-संयम की दिशा में आगे बढ़े। सामाजिक-साधना करें। भोगों का संयम होगा तो रोगों से भी मुक्ति मिलने की स्थिति में आदमी आ सकता है। भोग पर अंकुश हो, योग की साधना हो तो रोग से मुक्ति मिल सकती है।

संसार में मनोरंजन भी चलता है, पर उससे ऊँचा आत्मरंजन है। राग-द्वेष की मुक्ति की साधना हो। आचार्यश्री ने फरमाया कि उत्तर गुजरात की अणुव्रत यात्रा के अंतर्गत आज इडर आना हुआ है। इडर के सभी समाज में खूब धार्मिक

चेतना रहे। हमारा प्रवास राजेश खमेसरा के यहाँ हुआ है। इनके परिवार में भी धार्मिक गतिविधियाँ बनी रहें।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना-स्वागत में राजेश खमेसरा, भाविक खमेसरा, दिगंबर समाज से महावीर डोसी, स्थानकवासी समाज से बाबूलाल, मूर्तिपूजक समाज से अमरीश भाई, ऊमा बंगलोज से डॉ० पंकज भाई, सोनू-आरती, स्वीटी भानावत, नव्या-विहाना व कुसुम सुतरिया, वितेश्वर धाम शांति गिरि (बडौली), इडर नगर प्रमुख जयसी भाई तंवर, लक्ष्मीलाल झाबक ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। विमल बोरदिया ने अणुव्रत समिति की घोषणा की। महिला मंडल द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

लाभ होने पर भी लोभ को बढ़ने....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि पूज्यप्रवर गुजरात उत्तर संविभाग की यात्रा करते हुए अनेक तीर्थ क्षेत्रों में भी प्रवास कर रहे हैं। जहाँ महापुरुषों का आगमन होता है, वह स्थान भी स्वयं तीर्थ बन जाता है। शासनमाता प्रायः कहती थीं कि जहाँ गुरुदेव पधारते हैं, वह धरा तीर्थ और पवित्र बन जाती है। गुरुदेव जहाँ पधारते हैं, लोगों में अमृत का वितरण करवाते हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभा के अध्यक्ष सुशील चावत, केतन भाई डूंगरवाल, मूर्तिपूजक समाज से सी० सेठ, स्थानकवासी समाज से सुरेश मुणोत एवं ज्ञानशाला से अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेममं द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। उत्तर गुजरात की १७ ज्ञानशाला के बच्चों ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

पूज्यप्रवर जब हिममतनगर पधार रहे थे तो मार्ग में दमनदीव न दादरा नगर हवेली के उपराज्यपाल प्रफुल्लभाई पटेल ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर को कम्प्यूटर सेट व प्रिंटर भेंट

गंगाशहर।

तेरापंथी सभा, गंगाशहर समय-समय पर सर्व जनहितार्थ कार्य करती रहती है। तेरापंथी सभा द्वारा एक कम्प्यूटर सेट तथा प्रिंटर आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर को भेंट किया गया। इस अवसर पर तेरापंथी महासभा संरक्षक लूणकरण छाजेड़ ने कहा कि आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर मानवता की बहुत बड़ी सेवा कर रहा है।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, उपाध्यक्ष नवरतन बोथरा, मंत्री रतनलाल छालाणी, सहमंत्री पवन छाजेड़, संगठन मंत्री मांगीलाल लुणिया, लूणकरण बोथरा, मनमल सोनी द्वारा एटीडीसी के संयोजक पीयूष लुणिया आदि सदस्यों को कम्प्यूटर सेट व प्रिंटर सुपुर्द किया।

इस अवसर पर डायग्नोस्टिक सेंटर के संयोजक पीयूष लुणिया ने उपस्थित सभी महानुभावों का स्वागत किया तथा धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने एटीडीसी के २ साल के कार्यकाल की संक्षिप्त जानकारी सभा में प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री भरत गोलछा ने किया।

आकाश की तरह विशाल विशाल लक्ष्य बनाएँ

प्रज्ञा विहार, कांकरोली।

प्रज्ञा विहार में साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'मंजिलें' कार्यशाला का आयोजन हुआ। साध्वी डॉ० परमयशा जी ने कहा कि जिंदगी में हर व्यक्ति सफलता के शिखर को छूना चाहता है। ऊँची सोच का ऊँचा जादू होता है। जो गुलशन को गुलजार बनाता है। आकाश की तरह विराद विशाल लक्ष्य का निर्धारण करें। बारह व्रतों की आराधना, चौदह नियमों का पारायण, त्याग-प्रत्याख्यान से जीवनशैली को सर्वोत्तम बनाएँ। अनावेश, शांति, संतोष की साधना असली पुंजी है। आक्रोश, उतेजना हार का प्रमाण पत्र है। बैंक बैलेंस जितना जरूरी है, उससे ज्यादा जरूरी है ब्रेन बैलेंस रखना।

आपने आगे कहा कि टीम मैनेजमेंट को अपना अभिन्न कल्याण मित्र बनाएँ। पल-पल का सदुपयोग करने वाले महानता के शिखर पुरुष बन जाते हैं। आत्मविश्वास मानव जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है। यह एक ऐसी मशाल है जो जीवन को प्रकाश से भर देता है।

कार्यशाला की शुरुआत साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से की और उसके पश्चात, तेरापंथ महिला मंडल ने 'महाश्रमण अष्टकम्' से मंगलाचरण किया। तेममं की अध्यक्ष इंद्रा पगारिया ने राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया एवं उनकी टीम और उपस्थित जनमेदिनी का स्वागत किया।

साध्वी डॉ० परमयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी और साध्वी कुमुदप्रभा जी ने गीत के माध्यम से उपस्थित जनमेदिनी को आह्वान किया कि आकाश जैसा विशाल लक्ष्य बनाएँ। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाश सोनी ने भी राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत किया।

कार्यशाला में मेवाड़ प्रभारी डॉ० नीना कावड़िया, महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला चंडालिया, राष्ट्रीय पूर्व अध्यक्ष कल्पना बैद और राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने 'मंजिलें' कार्यशाला पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यशाला में तेममं ने लघु नाटिका प्रस्तुत की।

द पावर ऑफ साइलेंस शिल्पशाला का आयोजन

लिलुआ।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अभातेममं के निर्देशानुसार स्थानीय तेममं ने द पावर ऑफ साइलेंस शिल्पशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन लिलुआ में हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि दुनिया में तीन शक्तियाँ

श्री महिला मंडल के विविध आयोजन

हैं—मन, वचन और काय की। मन और काया के मध्य है वचन की शक्ति। जीवन के धरातल पर वाणी और व्यवहार का सर्वाधिक मूल्य है। वाणी बिना घर, परिवार, समाज, राष्ट्र का विकास संभव नहीं है। वाणी और पाणी का उपयोग सोच-विचार करके करना चाहिए। बोलना चाँदी है तो मौन रखना सोना है। अनावश्यक नहीं बोलना ही मौन है। कब, कैसे, कितना, कहाँ बोलना इसका विवेक जरूरी है।

अनावश्यक बोलने से शिष्टता की मर्यादा का लोप होता है। मुनिश्री ने आगे कहा कि साधना का प्रवेश द्वार व वाणी संयम का विशिष्ट प्रयोग मौन है। मौन से अनेक प्रकार की शक्तियों का प्रादुर्भाव होता है। मौन से धर्म व समय की हानि नहीं होती है। व्यक्ति विवाद से बच जाता है। तनाव से मुक्ति मिलती है। स्मरण शक्ति का विकास होता है। मन में समाधि रहती है। वक्त पर मौन रखने से ही व्यक्ति का मूल्यांकन होता है। मौन से कर्मजा शक्ति का व प्रज्ञा का जागरण होता है।

इस अवसर पर तेममं की बहनों ने मंगलाचरण किया। तेममं की अध्यक्षा बेला बाई पोरवाल ने स्वागत भाषण व आभार ज्ञापन संगीता पारख ने किया। मुनि कुणाल कुमार जी ने मधुर भजन सुनाया और कार्यक्रम का संचालन किया।

मदुरै।

अभातेममं द्वारा निर्देशित कार्यशाला 'द पावर ऑफ साइलेंस' का आयोजन तेममं, मदुरै द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया। संघ सरक्षिका चंद्रकांता देवी कोठारी ने सभी का स्वागत करते हुए साइलेंस से होने वाले फायदों के बारे में बताया। मंत्री दीपिका फूलफगर ने साइलेंस के बारे में बताया कि 'मौन एक ऐसा शब्द है, जिसका हम बहुत ही कम वर्णन करते हैं, लेकिन इसकी शक्ति बहुत ही अधिक है। मौन हमें शांति, तंगी से छुटकारा प्रदान करती है और हमें अधिक विवेक प्रदान करती है। मौन एक व्यक्ति के विचारों को समझने और उन्हें सही तरीके से व्यक्त करने में मदद करती है।

मौन हमें अपने विचारों को समझने और समझाने के लिए अधिक समय प्रदान करता है। यदि हम कुछ बातें बिना सोचे ही बोल दें तो हमें बातें गलत तरीके से बोलने में हो सकती है।

मौन के बिना, हम अपने विचारों को पूरी तरह से समझ पाते हैं। उन्होंने हमें साइलेंस कब, कहाँ और कैसे रहना चाहिए, इसके क्या-क्या फायदे हो सकते हैं, इस बात की जानकारी दी। सुनीता कोठारी ने कार्यक्रम का संयोजन एवं आभार ज्ञापन किया।

उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, चेन्नई के तत्त्वावधान में निर्माण कार्यक्रम के अंतर्गत 'उम्मीद एक बेहतर कल की' की तृतीय एवं चतुर्थ कार्यशाला का आयोजन पट्टालम् जैन विद्यालय में छठी क्लास के 920 बच्चों के साथ किया गया। कार्यशाला का तृतीय विषय 'सत्य' एवं चतुर्थ विषय 'माता-पिता के आज्ञा का पालन' था। समसामयिक विषय के अंतर्गत 'गुड टच बैड टच' एवं 'पुस्तकों और शिक्षा का महत्त्व' विषय पर भी कार्यशाला आयोजित की गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात प्रेरणा गीत महिला मंडल द्वारा हुआ। अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। महाप्राण ध्वनि पादहस्तासन एवं संकल्प का प्रयोग करवाया गया। संयोजिका सुभद्रा लुणावत एवं गुणवंती खाटेड़, कन्या मंडल से अक्षी बोहरा ने इंग्लिश एवं तमिल भाषा में सभी विषय को कहानी, घटना एवं स्किट के रूप में प्रस्तुत किया। बच्चों ने भी स्किट की प्रस्तुति दी। कार्यशाला में लीना सेठिया, सूरज बोथरा, संगीता आच्छा, मनाली गोलेच्छा की सहभागिता रही। मंत्री रीमा सिंघवी ने आभार ज्ञापन किया।

निर्माण प्रोजेक्ट के प्रायोजक दिलीप कुमार, नितेश कुमार गोलेच्छा की तरफ से बच्चों को पुरस्कार प्रदान करवाया गया।

हमारी जीवनशैली अहिंसात्मक बने

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, बालोतरा की अध्यक्षा निर्मला देवी संकलेचा की अध्यक्षता में 'अहिंसात्मक हो हमारी जीवनशैली' कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार सार्वजनिक स्थलों में किया गया। महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि नगर परिषद, मजिस्ट्रेट ऑफिस और थाना आदि जगहों में जाकर इस कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार किया एवं लोगों को इस कार्यक्रम की जानकारी दी तथा सभी को अहिंसात्मक जीवन जीने की प्रेरणा दी।

केंद्र द्वारा निर्देशित इस कार्यक्रम के तहत आए हुए संकल्पों के बारे में भी जानकारी दी गई। संकल्प पत्र भी भरवाए गए। एसडीएम ऑफिस, रेलवे स्टेशन, डीडवानिया गल्स कॉलेज, उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय, कट एन पार्लर, पीनन

हैडलूम में भी कार्यक्रम आयोजित किया गया। आयुक्त शिवपाल सिंह, पार्षद रामेश्वरी प्रजापत, उगमराज, नायाब तहसीलदार, पारसमल, गल्स कॉलेज के प्रिंसिपल अर्जुन पुनिता, स्कूल के प्रिंसिपल अध्यक्षपक व सभी बच्चों ने संकल्प लेने की सहमति प्रदान की।

कॉलेज के प्रिंसिपल ने भी अभातेममं के इस कार्य की प्रशंसा की। प्रभारी सारिका बागरेचा ने इस कार्यक्रम में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

केंद्र द्वारा निर्देशित वीडियो, स्लोगन, पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। वीडियो प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मीना ओस्तवाल, द्वितीय स्थान सारिका बागरेचा का रहा। पोस्टर में प्रथम स्थान मीना ओस्तवाल, द्वितीय स्थान नीतू श्रीश्रीमाल का रहा। स्लोगन में मीना ओस्तवाल ने भाग लिया। सभी को तेममं की तरफ से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उपाध्यक्ष चंद्रा बालड, रानी बाफना, सहमंत्री इंदु भंसाली, रेखा बालड, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, निर्वतमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल उपस्थित रहीं।

लाइफस्टाइल विदाउट क्रुएल्टी कार्यशाला

कोयंबदूर।

स्थानीय तेममं ने लाइफस्टाइल विदाउट क्रुएल्टी कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें कुल 25 बहनों की सहभागिता रही। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से बबीता गुनेचा ने की। महिला मंडल की बहनों ने गीतिका का संगान किया। रुचिका बैद ने पीटा वेबसाइट पर उपलब्ध सर्टिफाइड ब्रांच की जानकारी देते हुए मंडल की बहनों से अनुरोध किया कि वे जब भी कोई प्रोडक्ट खरीदें तो उसकी पूरी जाँच करें कि उससे कोई जीव हिंसा ना हुई हो और तब ही उसे लें। लाइफस्टाइल विदाउट क्रुएल्टी पर वीडियो दिखाया गया। बहनों ने जागरूकतापूर्वक इसकी प्रस्तुति दी। जानवरों की सुरक्षा में कार्यरत होप ऑर्गेनाइजेशन से पधारे देव और हरिहरन का स्वागत और सम्मान मंडल की अध्यक्षा मंजु गिड़िया ने किया। देव ने पीपीटी द्वारा जानवरों के बचाव हेतु किए गए कार्य के

बारे में बताया। उन्होंने पेटक्लिनिक और रेस्क्यू सेंटर के बारे में जानकारी दी और बहनों से निवेदन किया कि वे कैसे जानवरों की सुरक्षा कर सकते हैं, तत्पश्चात हमारी मंडल की बहन तत्त्वप्रचेता हेमा भंसाली ने इस विषय पर प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्होंने हिंसा और अहिंसा के बीच का फर्क समझाया और बताया कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण में कैसे हम हिंसा करने से बच सकते हैं।

इसी कड़ी में महिला मंडल से कोमल फलोदिया एवं कन्या मंडल संयोजिका ख्याति सेमलानी एवं रिद्धि पुगलिया ने मंचीय नाटक की प्रस्तुति दी। ममता पुगलिया ने बहनों से संकल्प पत्र भरवाए और लाइफस्टाइल विदाउट क्रुएल्टी की डीपी लगवाई। कार्यक्रम का संयोजन एवं धन्यवाद ज्ञापन रुचिका बैद ने किया।

उर्वी मुखरित दीवारें के तहत कार्यक्रम का आयोजन

नोखा।

अभातेममं के निर्देशानुसार नारी लोक में निर्देशित कार्य 'उर्वी मुखरित दीवारें' के तहत नोखा महिला मंडल के तत्त्वावधान में कन्या मंडल द्वारा स्थानीय पार्क 'भिक्षु वाटिका' में कुछ चित्रों का चित्रांकन किया। शासन गौरव साध्वी राजीमती जी के मंगल पाठ से शुरू हुआ कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कन्या मंडल, महिला मंडल सभी का पूर्ण सहयोग रहा। कन्या मंडल संयोजिका पूजा लोढ़ा ने बताया कि उन्होंने दो चित्रों का चित्रांकन किया, जिसमें एक हरी-भरी बालिका का चित्र बनाया गया जो पूर्णतः फूलों व हरियाली से सज्जित है और खुशहाली का प्रतीक है। एक और चित्र बनाया गया, जिसमें पृथ्वी के दो प्रकार बताए गए हैं कि अगर धरती वनों, पानी और हरियाली से भरी पूरी रही तो किस तरह दिखेगी, वही पृथ्वी अगर कल-कारखानों, वाहनों आदि के धुएँ और वनों के कटने के पश्चात् उसकी क्या दुर्दशा हो जाएगी।

चित्र कन्या मंडल की बहनों—पूजा लोढ़ा, प्रियंका लुणिया, प्रेरणा लुणिया, मोना रांका, मुस्कान रांका द्वारा बनाए गए। चित्र का लोकार्पण महिला मंडल अध्यक्षा मंजु देवी बैद एवं मंत्री प्रीति मरोठी द्वारा किया गया। कन्या मंडल की भी सदस्य उपस्थित रही।

◆ अणुव्रत कहता है—तुम परलोक को मानो या मत मानो, आचरण को अच्छा बनाने का प्रयास करो, जीवन में नैतिकता को धारण करो, जीवन उन्नत बन सकेगा।

◆ जीवन में समता भाव प्रस्फुटित हो जाता है तो मानना चाहिए कि व्यक्ति के जीवन में धर्म अवतरित हो गया।

— आचार्यश्री महाश्रमण



साध्वीश्री जी का स्वागत समारोह आयोजित

गंगाशहर।

तेरापंथी सभा द्वारा नवनियुक्त सेवाकेंद्र व्यवस्थापिका शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी तथा साध्वी ललितकला जी का सेवा केंद्र में पधारने पर स्वागत समारोह का आयोजन रखा गया। स्वागत समारोह पर साध्वी शशिरेखा जी ने कहा कि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने महती कृपा करके इस वर्ष गंगाशहर सेवा केंद्र का प्रवास प्रदान किया है। उन्होंने सेवा को कर्ज तथा फर्ज बताते हुए कहा कि दायित्व ग्रहण के बाद यह पहली चाकरी है। गंगाशहर की धरती उर्वरा है। गुरु आज्ञा व आदेश सर्पोपरि है, धर्मसंघ में सेवा का अवसर उपहार है तथा इससे कर्म निर्जरा होती है।

साध्वी ललितकला जी ने कहा कि सेवा करना निर्जरा का अवसर प्राप्त करना है। उन्होंने सेवा को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा कि हमारा सौभाग्य है कि हमें तेरापंथ जैसा धर्मसंघ प्राप्त हुआ है। साध्वी कांताश्री जी तथा साध्वी योगप्रभा जी ने भी सभा को संबोधित किया। सेवा केंद्र में विराजित साध्वियों द्वारा सामूहिक गीत के द्वारा सेवा प्रदान करने वाली साध्वियों का स्वागत किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ विमला देवी बुच्चा द्वारा मंगलाचरण से किया गया। कन्या मंडल तथा महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। साध्वी कीर्तिलता जी द्वारा सेवाकेंद्र का दायित्व हस्तांतरण साध्वी

शशिरेखा जी तथा साध्वी ललितकला जी को किया गया।

इस अवसर पर साध्वीवृंद द्वारा सामूहिक गीत प्रस्तुत किया गया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, तेरापंथ न्यास के ट्रस्टी लूणकरण छाजेड़, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के मंत्री दीपक आंचलिया, महिला मंडल अध्यक्ष ममता रांका, तेयुप के संगठन मंत्री रोहित बैद, अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा, तोलाराम सामसुखा, धर्मचंद सामसुखा, शांतिलाल संचेती ने स्वागत में अपने विचार अभिव्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री रतनलाल छलाणी ने किया।

साध्वीश्री जी का तमिलनाडु सीमा में प्रवेश

बैंगलोर।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी आदि पार्श्वनाथ सुशील धाम जैन मंदिर से विहार कर प्रकाश प्लास्टिक फैक्ट्री, होसुर, तमिलनाडु पधारे।

तेयुप, बैंगलोर अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा ने साध्वीश्री जी के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना एवं कृतज्ञता ज्ञापित की। संघ संवाद से जितेंद्र घोषल ने गीतिका द्वारा मंगलकामना व्यक्त की। अभातेयुप से शाखा प्रभारी सोनू डागा ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि पूज्यप्रवर ने साध्वीश्री जी का चातुर्मास तिरुपुर को दिया। हनुमंत नगर तेयुप अध्यक्ष महावीर चावत ने अपनी भावनाएँ प्रेषित की। तिरुपुर एवं होसुर महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि दवा बड़ी नहीं होती डॉक्टर बड़ा होता है, रत्न बड़ा नहीं होता परीक्षक बड़ा होता है, गुरुदृष्टि व गुरु आशीर्वाद से हमने मंगल दिन में मंगल क्षणों में तमिलनाडु का मंगल प्रवेश किया है, आगामी चातुर्मास व पिछले चातुर्मास अर्थात् कर्नाटक और तमिलनाडु दोनों क्षेत्रों के श्रावक समाज बहुत ही जागरूक व सेवाभावी है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि देवलोक की सुधोष घटा की तरह साध्वीश्री जी भी आचार्यश्री महाश्रमण जी के संदेश

वाहिका बनकर तमिलनाडु में प्रवेश कर रही है। जन-जन के भीतर सद्भावना व साहित्य की चेतना का जागरण हो। साध्वी मेरुप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी दक्षप्रभा जी ने मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत की।

इस अवसर पर प्रकाश जोगड़, प्रताप पोरवाल, संतोष सरिता गोठी, होसुर से मंगलचंद बाफना, राकेश संचेती, पवन सेठिया, विनय सेठिया, ऋषभ बाबेल, महेंद्र बाफना, राजेश सुराणा आदि सहित अनेक सदस्यों की उपस्थिति रही।

♦ यदि दुनिया में धोखा न हो तो दुनिया बहुत अच्छी बन सकती है। ईमानदारी के प्रति सधन आस्था हो तो अनेकानेक समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

— आचार्यश्री महाश्रमण



अभातेयुप योगक्षेम योजना

| | |
|---|-----------|
| * अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021 | 51,00,000 |
| * श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर | 5,00,000 |
| * श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना | 5,00,000 |
| * श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई | 5,00,000 |
| * श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई | 5,00,000 |
| * श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा | 5,00,000 |
| * श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत | 5,00,000 |
| * श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई | 5,00,000 |
| * श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई | 5,00,000 |
| * श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा | 5,00,000 |
| * श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा | 5,00,000 |
| * श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छपर-सिलीगुड़ी | 5,00,000 |
| * श्री बसंत नवलखा, बीकानेर | 5,00,000 |
| * श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर | 5,00,000 |
| * श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत | 5,00,000 |
| * श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई | 5,00,000 |



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

फरीदाबाद।

अरुण मरोठी दिल्ली निवासी, गंगाशहर प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक राजेश जैन व जितेंद्र लुनिया ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

तेयुप, फरीदाबाद की तरफ से परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

पाली।

कंवरलाल पीयूष कुमार चोपड़ा के यहाँ गृह प्रवेश का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से किया गया।

नूतन गृह प्रवेश संस्कारक बसंत सोनी मंडिया ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा नमस्कार महामंत्र, मंगल मंत्रोच्चार के साथ गृह प्रवेश का कार्यक्रम संपन्न करवाया।

आयोजित कार्यक्रम से पूरे चोपड़ा परिवार ने प्रसन्नता जाहिर की और संस्कारकों का आभार व्यक्त किया।

नामकरण संस्कार

चेन्नई।

जैन तेरापंथ नगर माधावरम् प्रवासी, गंगाशहर निवासी सुंदरलाल मुकेश रांका के निवास स्थान पर मुकेश-इंदु रांका के नवजात शिशु सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक पदमचंद आंचलिया, संस्कारक मांगीलाल पीतलिया, संस्कारक रोशन बोथरा ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

विवाह संस्कार

चेन्नई।

नागौर निवासी, चेन्नई प्रवासी चि० विमलेश डागा सुपुत्र प्रसन्नचंद डागा का शुभ विवाह सौभाग्यवती सपना कुमारी सुपुत्री संतोषचंद पोरकरणा के साथ विवाह संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक स्वरूपचंद दांती, मांगीलाल पितलिया, हनुमान सुखलेचा, रोशन बोथरा ने संपूर्ण मंगल मंत्रोच्चार के साथ विधि संपन्न करवाई।

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी शांतिलाल ललवानी की सुपुत्री कुसुम का शुभ विवाह गंगाशहर निवासी सुरेंद्र कुमार भंसाळी के रोशन कुमार के साथ जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक पवन छाजेड़, देवेन्द्र डागा और विपिन बोथरा ने विवाह विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

इस दौरान उपस्थित तेरापंथी सभा, गंगाशहर के अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने दोनों परिवारों की तरफ से जैन संस्कारकों का आभार प्रकट किया।

सूरत।

बड़ी सादड़ी निवासी सूरत प्रवासी ललित कावड़िया के सुपुत्र अंकित कावड़िया का शुभ पाणिग्रहण संस्कार श्रीडूंगरगढ़ निवासी, सूरत प्रवासी नारायण डागा की सुपुत्री पूनम डागा के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, धर्मचंद सामसुखा व बजरंग बैद ने मंगल मंत्रोच्चार एवं संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

ललित व नारायण और उनके पूरे परिवार ने संस्कारकों व उपस्थित सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

भूमि पूजन

हैदराबाद।

पदमचंद, झूमरमल दुगड़ (तारानगर निवासी) हैदराबाद प्रवासी के यहाँ बसंत पंचमी को मकान के नवनिर्माण के लिए भूमि पूजन का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। तेयुप, हैदराबाद के संस्कारक ललित लुगिया एवं राहुल गोलछा ने जैन पद्धति से शिलान्यास जैन मंत्रोच्चार पारिवारिकजनों की उपस्थिति में संपन्न करवाया।

पदम, झुमर दुगड़ को जैन संस्कारकों को बहुमान देने के लिए बहुत-बहुत हार्दिक साधुवाद।

मनोनुशासनम्

□ आचार्य तुलसी □



पहला प्रकरण

वैराग्य ज्ञानयोग का ही प्रकार है। आत्मज्ञान की निर्मलता वैराग्य का रूप ले लेती है। कोई भी आदमी ऐसा नहीं हो सकता जो आत्मज्ञानी नहीं है और विरक्त है। ऐसा भी कोई आदमी नहीं हो सकता जो विरक्त नहीं है और आत्मज्ञानी है। जो आत्मज्ञानी होगा वह विरक्त होगा और जो विरक्त होगा वह आत्मज्ञानी होगा, यह निश्चित व्याप्ति है।

आत्मज्ञान के दो हेतु हैं—निसर्ग और अधिगम। कुछ लोग निसर्ग से ही आत्मज्ञानी होते हैं। अधिगम का अर्थ है गुरु का उपदेश। गुरु के उपदेश से आत्मज्ञान प्राप्त करने वाले नैसर्गिक आत्मज्ञानी की अपेक्षा अधिक होते हैं। नैसर्गिक आत्मज्ञानी ज्ञान के द्वारा मानसिक एकाग्रता प्राप्त करते हैं किंतु गुरु के उपदेश से आत्मज्ञान की दिशा में चलने वाले श्रद्धा के प्रकर्ष से मानसिक एकाग्रता साध लेते हैं। श्रद्धा के प्रकर्ष में विश्वास केंद्रित हो जाता है और मन की तरलता सघनता में बदल जाती है।

ज्ञान और वैराग्य चैतन्य की स्वाभाविक क्रियाएँ हैं। श्रद्धा का प्रकर्ष प्रेरणा से प्राप्त क्रिया है। मन की एकाग्रता केवल इन्हीं से नहीं होती है। वह शरीरसंयम से भी हो सकती है। शरीर की चंचलता अर्थात् मन की चंचलता। शरीर की स्थिरता अर्थात् मन की स्थिरता। शरीर की स्थिरता शिथिलीकरण के द्वारा प्राप्त होती है। शिथिलीकरण की पूरी प्रक्रिया कायोत्सर्ग के प्रकरण में दी जाएगी।

शरीर की शिथिलता संकल्प और श्वास-संयम पर निर्भर है। आप पद्मासन या सखासन में बैठकर शरीर को ढीला छोड़ दीजिए और शरीर की शिथिलता का संकल्प कीजिए। शरीर शिथिल हो रहा है, ऐसा अनुभव कीजिए। अनुभव जितना तीव्र होगा, उतनी ही अधिक सफलता प्राप्त होगी।

संकल्प की साधना के पश्चात् श्वास-संयम का अभ्यास कीजिए। यहाँ श्वास-संयम से मेरा अभिप्राय प्राण को सूक्ष्म करने से है। हम जो श्वास लेते हैं, वह स्थूल प्राण है। श्वास लेने की जो शक्ति (श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति) है, वह सूक्ष्म प्राण है। नाभि और नासाग्र पर दो-चार क्षण के लिए मन को एकाग्र कीजिए। सहज ही श्वास-संयम हो जाएगा। श्वास की मंदता या सूक्ष्मता से शरीर की क्रियाएँ सूक्ष्म हो जाती हैं और शिथिलीकरण सध जाता है। शरीर की स्थिरता और श्वास की स्थिरता होने पर मन का निरोध सहज-सरल हो जाता है।

मन की प्रवृत्ति संकल्प और विकल्प के द्वारा बढ़ती है। उसका निरोध होने पर मन का निरोध अपने आप हो जाता है। संकल्प-निरोध और ध्यान में भिन्नता नहीं है। संकल्प का निरोध किए बिना ध्यान नहीं होता और जब ध्यान होता है, तब संकल्प का निरोध होता ही है। फिर भी यहाँ संकल्प-निरोध को मानसिक स्थिरता का ध्यान से भिन्न साधन माना है। उसका एक विशेष हेतु है। उसके द्वारा एक विशेष प्रक्रिया का सूचन किया गया है। संकल्प का प्रवाह निरंतर चलता रहता है। लंबे समय तक उसे रोकने में कठिनाई होती है। इसलिए प्रारंभ में उस प्रवाह की निरंतरता में विच्छेद डालने का अभ्यास करना चाहिए। इस प्रक्रिया को आकस्मिक कुंभक के द्वारा संपन्न किया जा सकता है। आप पूरक और रेचन न करें! एक क्षण के लिए कुंभक करें, वह भी आकस्मिक ढंग से। जैसे कोई बाधा आने पर चलता पैर अकस्मात् रुक जाता है, वैसे ही श्वास को हठात् बंद कर दीजिए। क्षण-भर के लिए कुंभक की मुद्रा में रहिए। जिस क्षण कुंभक होगा, उस क्षण में संकल्प भी उसी प्रकार आकस्मिक ढंग से बंद हो जाएगा। इस क्रिया को पाँच-दस मिनट के बाद फिर दोहराएँ। इस प्रकार बार-बार अभ्यास करने से संकल्प का प्रवाह स्थूलित हो जाता है। लंबे समय की एकाग्रता के लिए यह क्रिया पृष्ठ-भूमि का काम करती है।

मानसिक निरोध का प्रबलतम हेतु ध्यान है। जब हम किसी एक विषय पर स्थिर रहने का अभ्यास करते हैं, तब मन की चंचलता को एक स्थान में रोकने का प्रयत्न करते हैं। उच्छृंखलता से विचरने वाली मन की चंचलता का क्षेत्र सीमित हो जाता है, हजारों-हजारों विषयों से हटकर एक विषय में सिमट जाता है, यह मन की चंचलता का गतिभंग है। इसकी बार-बार पुनरावृत्ति होने पर वह गतिभंग गतिनिरोध के रूप में बदल जाता है। गौतम ने पूछा—‘भंते! एक आलंबन पर मन का सन्निवेश करने से क्या लाभ होता है?’ भगवान् महावीर ने कहा—‘गौतम! उससे चित्त का निरोध हो जाता है।’

चित्त-निरोध की प्रक्रिया गुरु के उपदेश से प्राप्त होती है और प्रयत्न की बहुलता से उसकी सिद्धि होती है। मन की स्थिरता जान लेने मात्र से नहीं होती। इसके लिए अनेक प्रयत्न करने होते हैं, लंबे समय तक निरंतर और श्रद्धा के साथ। कोई व्यक्ति मानसिक स्थिरता का अभ्यास करता है, उसमें पूरा समय नहीं लगाता अर्थात् तीन घंटे का समय नहीं लगाता, उसे पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होती। थोड़ा समय लगाने से कुछ लाभ अवश्य होता है किंतु कोई भी आदमी स्वल्प प्रयत्न से शिखर तक नहीं पहुँचता।

जिसका चित्त अनवस्थित होता है—कभी स्थिरता का अभ्यास करता है, कभी नहीं करता, इस प्रकार कभी-कभी अभ्यास करने वाला भी सफलता से वंचित रहता है। लंबे समय तक और निरंतर अभ्यास करने वाला भी श्रद्धा के बिना सफल नहीं हो सकता। श्रद्धा का अर्थ है, तन्मय हो जाना; ध्येय के प्रति समर्पित हो जाना या उसमें विलीन हो जाना।

गुरु का उपदेश—ध्यान की प्रक्रिया की शिक्षा, श्रद्धा, दीर्घकालीन और निरंतर अभ्यास—इस पूर्ण सामग्री के प्राप्त होने पर मानसिक एकाग्रता या निरोध की साधना सरल हो जाती है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

□ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा □

(१३२)

- (१) एक तूफान आया
ऐसा भयंकर तूफान
जो बोधि के महान वटवृक्ष को
इतने आहिस्ते से
उखाड़कर ले गया कि
किसी को अहसास तक नहीं होने दिया।
- (२) एक देदीप्यमान सूरज
मन-मंदिर के हर कोने को
उजालने वाला सूरज
जिसके सामने खुली आँखों
देखना भी मुश्किल था
अचानक बादलों की ओट हो गया
मानो सृष्टि का
प्राणतत्त्व ही खो गया।
- (३) एक ऊर्जा
जन-जन को जीवन बाँटने वाली ऊर्जा
जो बह रही थी लाखों-लाखों प्राणों में
अचानक यों थम गई
जैसे पहाड़ से उतरती
बरसाती नदी जम गई।
- (४) एक उजली छवि
जन-जन की आँखों में बसी अलौकिक छवि
जिसे देखकर मन कभी भरता नहीं था
अचानक यों तिरोहित हो गई
जैसे एक विराट चेतना शून्य में खो गई।
- (५) एक युग
जो चल रहा था
पूरी रफ्तार के साथ
जिसका हर दिन था सोना
और चाँदी थी उजली रात
उसका इतना अप्रत्याशित अवसान
कभी सोचा नहीं था।

□
(समाप्त)

चुनौतियों से कतराने का प्रयास न करें चंडीगढ़।

चुनौतियों से निरंतर जूझते रहने का नाम ही जीवन है। जिन्हें सदा संरक्षण मिलता रहा वे स्वतंत्र रूप से बेहतरीन कार्य निष्पादन में अक्षम रहे। ज्ञान-विज्ञान, तकनीक, कला, साहित्य, अध्यात्म, समाजकार्य आदि क्षेत्रों में जिन्होंने बुलंदियाँ हासिल की, उन्होंने कुदाली पकड़कर अपने रास्ते स्वयं तैयार किए। लक्ष्य प्राप्ति की उधेड़बुन में एक-दर-एक चुनौतियों से निबटने की प्रक्रिया में उन्हें निजी स्वार्थ साधने की सुध न रही। यह विचार मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी ‘आलोक’ ने अणुव्रत भवन, तुलसी सभागार में व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि कर्मवीर चुनौतियों से कतराना या बचने का प्रयास नहीं करता। ऐसा इसलिए, क्योंकि वह जानता है कि इन्हीं सीढ़ियों के माध्यम से मंजिल तक पहुँचा जा सकता है। मुनिश्री ने कहा कि स्वयं को सही समझने के अहंकार से बचें।



♦ यदि जीवन में संयम अवतरित हो जाता है तो व्यक्ति सुखमय जीवन जी सकता है।

—आचार्य श्री महाश्रमण

♦ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेधानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिबोधिता रहे।

—आचार्य श्री महाश्रमण



शासन माता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की प्रथम पुण्यतिथि पर श्रद्धाप्रणति

वसंततिलका

आनम्य रम्यगुणगम्यमगम्यकीर्तः
साध्वीशिरोमणिसुधीकनकप्रभायाः।
आनन्ददं तदमलं यमलं पदाब्जं
भावान् निजान् प्रकटयामि यथार्थवृत्त्या ॥

अर्थ—मैं अथाह कीर्तिसंपन्न साध्वी शिरोमणि विदुषी कनकप्रभाजी के रम्य गुणों से अभिप्रेत (युक्त), आनन्ददायी, पवित्र चरणयुगल में नमन करके अपने भावों को यथार्थ वृत्ति से प्रकट करती हूँ।

जानामि नो तव समं कविताकलापं
लापं तनोमि ननु भक्तिभरस्यभारैः।
आलोक्य काव्यकलनां कविभिः सुसृष्टा
मारभ्यते प्रणतियुक्तनुतिर्मयाऽपि ॥

अर्थ—मैं आपके तुल्य काव्यकला को नहीं जानती, फिर भी भक्ति—समूह के भार से कथन कर रही हूँ। विद्वानों द्वारा सम्यग् प्रणीत काव्य—कृतियों को देखकर मेरे द्वारा भी प्रणति युक्त स्तुति प्रारंभ की जा रही है।

जाने जनान् जगति चापि निभालयामि
चित्ते कमे नयनयोर्वससि त्वमेव।
भूमौ पर्यासि सरसां सरसानि सत्यं
तोयं तथापि जलदस्य नभोम्बुपाय ॥

अर्थ—इस संसार में मैं लोगों को जानती हूँ और देखती भी हूँ, किंतु हृदय, मस्तिष्क और नेत्रों में आप ही बसती हो। यह सत्य है कि भूमि पर अनेक सरोवरों का पानी भीठा है, पर चातक को मेघ का जल ही प्रिय लगता है।

विश्वे गुणाऽगुणमयेऽपि गुणा गृहीता
दूरे विहाय सकलानपि दुगुणास्तु।
पात्रे पयोजलमहये किल राजहंसो
योग्यं यथा पिबति नो कमलं कदापि ॥

अर्थ—गुण—अवगुणमय लोक में आपने समस्त दुर्गुणों को दूर कर गुणों को ग्रहण किया, जैसे दूध मिश्रित जलमय पात्र से राजहंस दूध ही पीता है, कभी पानी नहीं पीता।

शार्दूलविक्रीडित

पादाब्जे सुगुरोः स्वकीयलघुतां दत्त्वा गता गौरवं
लब्धाऽनन्तविलक्षणा गुरुकृपा गम्यासुरम्या यया।
प्राप्ता नैकविधाभिधासुकथिता तां मंगलामंगला
वंदे शासनमातरं सविनयं नक्तं दिवा चेतसा ॥

अर्थ—सुगुरु के चरणकमल में अपनी लघुता अर्पित करके गौरव, असीम, विलक्षण, रमणीय गुरुकृपा तथा अनेक प्रकार की सुकथित मंगलकारी अभिधाओं को जिन्होंने प्राप्त किया, उन शासनमाता को विनम्र अंतःकरण से रात—दिन वंदन करती हूँ।

सौभाग्येन गतं मया प्रतिदिनं पुण्ये प्रभाते वरे
सान्निध्यं तव शासनस्य जननि! ज्ञानार्जनप्रक्रमः।
ज्ञानं नः स्थिरमस्तु पुष्टगहनं वीर्यं त्वया योजितं
धन्यास्ते दिवसाः क्षणा वयमपि क्षेमंकराः पावनाः ॥

अर्थ—शासन माते! मैंने पवित्र प्रभात में प्रतिदिन आपके सान्निध्य में सौभाग्य से ज्ञानार्जन का अवसर प्राप्त किया। हमारा ज्ञान स्थिर, पुष्ट एवं गहन बने, इसके लिए आपने अपने श्रम का नियोजन किया। वे कल्याणकारी एवं पावन दिन, क्षण और हम कृतकृत्य हो गए।

यामन्वेषयितुं गता बहिरितः तत्रैव नो प्रापिता
साक्षात्दर्शविधिर्मिलिष्यति कथं ध्यातं मयाऽनारतम्।
दृष्ट्वा चेतसि राजते मम वरे लब्धः चिरं विस्मयो
दूरं वा सविधं ब्रवीमि, सुतरां याती न जानाम्यहम् ॥

अर्थ—जिनको ढूँढ़ने के लिए मैं बाहर गई, वहाँ वे नहीं मिलीं। फिर मैंने सतत चिंतन किया कि साक्षात् दर्शन की प्रक्रिया कैसे प्राप्त होगी? तदनन्तर मेरे श्रेष्ठ अंतःकरण में उन्हें विराजित देखकर मुझे अत्यधिक विस्मय हुआ। वे अत्यंत दूर है या अति समीप, जानते हुए भी मैं नहीं जानती।

किं कार्यं पथदर्शनं कुरु मम झीप्सामि ते कामनां
तां धित्सामि ममात्मनि प्रतिपलं रित्सामि लक्ष्यं शुभम्।
निष्ठा चेतसि पीवरास्ति कियती मित्सामि सत्यावनौ
नैवीप्सामि कृपां विहाय विशदं शिक्षे तु हार्दार्पणम् ॥

अर्थ—अब मेरे लिए क्या करणीय है, आप पथदर्शन कीजिए, मैं आपकी कामना जानना चाहती हूँ। उसको आत्मा में धारण करके पवित्र लक्ष्य को पाना चाहती हूँ। मेरे अंतःकरण में निष्ठा कितनी पुष्ट है, यथार्थ के धरातल पर इसे मापना चाहती हूँ। आपकी कृपा को छोड़कर कुछ अन्य नहीं माँगती और आपके पवित्र, हार्दिक अर्पणभाव को सीखना चाहती हूँ।



स्रग्धरा

साध्वीशा भिक्षुपंथे त्रिमुनिपतियुगे कर्मशूरा सुसिद्धा,
पञ्चाशत्र्षबाढं किमुतभवदसौ सद्गुरुणां सहायया।
जुष्टा भक्तैश्च पुष्टा बहुगुरुकृपया शिष्टिर्भियांविशिष्टा,
जाता संपूर्णकामा सुगुरुचरणयोः श्वासमन्त्यं प्रदाय ॥

अर्थ—भैक्षव पंथ (तेरापंथ) में तीन आचार्यों के युग में पचास वर्षों से अधिक उनका (सद्गुरुओं का) अत्यंत सहयोग करने वाली सफल, पुरुषार्थशालिनी साध्वीप्रमुखा हुई, जो भक्तों से सेवित, (उपासित) गुरुकृपा से अत्यंत पुष्ट तथा अपनी अनुशिष्टि (अनुशासन) से विशिष्ट थीं, वे गुरुचरणों में अपना अंतिम श्वास प्रदान करके कृतकाम हो गईं।

इन्द्रवज्रा

वामे शये शोभितशिष्टियष्टि
ईस्तेऽपरे राजितहार्दसुष्टिः।
प्राप्तौ कुतो द्वौ विपरीतभावौ
चित्रा विचित्रा भुवने कथा ते ॥

अर्थ—आपके बाएँ हाथ में अनुशासन की यष्टि और दाएँ हाथ में प्रेम की सृष्टि विराजित थी। इन दो विपरीत भावों को आपने कहीं से प्राप्त किया। इस संसार में आपकी कथा विचित्र है।

राजीवपत्रस्थिततोयर्बिंदु
मुक्ताकृतिं नूनमुपैति नित्यम्।
गत्वा सदेशं मम हत्तु भूयो
जातं पवित्रं यदि किं विचित्रम् ॥

अर्थ—कमलपत्र पर स्थित जलर्बिंदु मुक्ता के आकार को प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार आपका अति नैकट्य पाकर यदि मेरा हृदय पवित्र हो गया तो इसमें आश्चर्य क्या?

वाण्यर्णवे ते तुलसी पयोऽभूत्
चित्ताम्बरे ते तुलसी भगोऽभूत्।
देहाचलायां तुलसी शलोऽभूत्
त्वं सर्वरूपे तुलसीमयी वै ॥

अर्थ—आपकी वाणी रुपी समुद्र में तुलसी रुप जल, चित्त रुपी आकाश में तुलसी रुप सूर्य तथा देह रुपी पृथ्वी में तुलसी रुप पर्वत विद्यमान था। आप सर्वरूपेण तुलसीमयी थी।

मितद्वराशिं गगनस्य सीमां,
ज्ञातुं समर्थो मनुजः कदाचित्।
परं विशालं प्रवरं गुणौघं
न वक्तुमर्हान् मनसा न वाचा ॥

अर्थ—कदाचित् समुद्र की जलराशि तथा आकाश की सीमा को जानने में मनुष्य कभी सफल भी हो जाए, किंतु आपके श्रेष्ठ एवं विशाल गुण समूह को मन से तथा वचन से व्यक्त करने में वह समर्थ नहीं हो सकेगा।

शिखरिणी

कला नाम्ना बाल्ये कृतिषु कलांयाः प्रतिकृतिः
प्रभायामाख्ये सा शुभकनकवर्णैः सुविदिता।
श्रमण्याः सन्दोहे यशसिगणभक्त्यां परपदा
प्रणम्याऽसामान्या त्रिगुरुवचनैर्भूषणमिता ॥

अर्थ—बचपन में नाम से कला, कार्यों में कला की प्रतिकृति, कांति और संज्ञा में श्रेष्ठ कनक वर्ण तथा अक्षरों से प्रसिद्ध, श्रमणी समूह, यश तथा गण—भक्ति में श्रेष्ठ स्थान की धारिका, असाधारण, तीन गुरुओं के वचन रुपी आभूषण को प्राप्त करने वाली वह (विभूति) प्रणम्य है।

यदीयं माहात्म्यं समजनि विशिष्टं समतया
यदीयं वैदुष्यं समजनि विशिष्टं लघुतया।
यदीयं करुण्यं समजनि स्वशिष्ट्या सुरुचिर—
मनन्या धन्या सा कनकसदृशा मातुहृदया ॥

अर्थ—जिनका माहात्म्य समता से, वैदुष्य लघुता से और कारुण्य अनुशासन से विशिष्ट एवं सुंदर बन गया, वे कनकतुल्या मातुहृदया अनन्य हैं, धन्य हैं।

सनाऽहं पश्येयं वदनकमलं मीलितदृशा
गुणानां गाथा ते वदतु सततं मूकरसिका।
श्रुती यातां शब्दान् श्रवणविकले मे तव सदा
त्यजेदन्यत्कार्यं करणपटलं भक्तिभरितम् ॥

अर्थ—मैं सदा बंद आँखों से आपके मुखकमल को देखूँ, मेरी मूक रसना सतत आपकी गुण—गाथा कहे, मेरे कान (अन्य शब्दों को) सुनने से विकल होकर सदा आपके शब्दों को ही प्राप्त करे। इस प्रकार मेरा भक्तिपूरित इंद्रियसमूह अन्य कार्यों से विरत हो जाए।

प्रकामं वात्सल्यं सकलमनुजप्रीणनपरं
प्रमोदप्राकर्ष्यं पदि पदि गुणामोदमहितम्।
प्रशस्या विश्वरितः प्रगतिपथचर्याविधिरता
ह्रमुष्या वंदे तां प्रकट महिमा सा दिवि गता ॥

अर्थ—जिनका अत्यधिक वात्सल्य मनुष्यों को संतुष्ट करने में निरत था, प्रमोद भाव की प्रकृष्टता पग—पग पर गुणों के आमोद से युक्त थी, प्रगति—पथ की चर्या में जिन्हें उत्तम विश्वास था, स्वर्गवास हो जाने पर भी जो प्रकट महिमा वाली हैं, उनको मैं वंदन करती हूँ।

मन्दाक्रान्ता

वागीशाऽसीत् वदनसमये वावदूका वदन्ति
प्राप्तारुपा प्रणयनपदे संशयो नास्ति किश्चित्।
नम्रा शिष्या गुरुचरणयोः वाचने संस्कृता वा
सा भक्तानां हृदि भगवती कानि रुपाणि वीक्षे?

अर्थ—युक्तिपुरस्सर विवेचन करने वाले कहते हैं कि वे वक्तव्य के समय वाग्मी (कुशल वक्ता), सृजन के दौरान निःसंदेह विदुषी, गुरु—चरणों में विनम्र शिष्या, अध्यापन के समय शास्त्र—संस्कार से युक्त तथा भक्तों के हृदय में देवी थी। उनको किन—किन रूपों को देखूँ?

शक्तिर्भक्तिर्विमलसुमतिः स्फूर्तिंसंचानुरक्तिः
प्रीत्याः वृष्टिर्मृदुकरुणदृष्टिर्विमुक्तिःस्युक्तिः।
शुद्धिः सिद्धिः प्रकृतिसुगती ज्ञानसूताविरक्ति
रासन् सर्वा तरणितनये! विश्रुतास्ते विशिष्टाः ॥

अर्थ—हे सूर्यसूता! (ज्ञातव्य है कि शासनमाता के संसारपक्षीय पिताजी का नाम सूरजमलजी बैद था) आपकी शक्ति, भक्ति, पवित्र मति, स्फूर्ति, संघ—अनुरक्ति, प्रेम की वृष्टि, कोमल, कृपामयी दृष्टि, विमुक्ति (निर्लोभता), श्रेष्ठ युक्ति (तर्कशक्ति), शुद्धि, सिद्धि, प्रकृति, सुगति, ज्ञान जनित विरक्ति—ये सभी विशेष तथा विख्यात थीं।

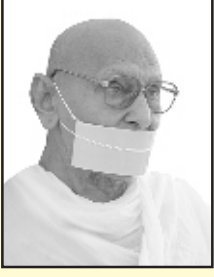
काव्यप्रज्ञा रूचिरकुशला विश्रुता चापि तासां
भाषाभावौ सरलगहनौ सारपूर्णां विशेषौ
शैली रम्या विलसतितरों मानसेऽद्यापि नृणाम्
साध्वीशायै कनकसदृशे सुष्ठु तस्मै नमो नः

अर्थ—काव्यनिर्माण में जिनकी मति सुंदर, निपुण और प्रसिद्ध थी, भाषा—भाव सरल, गहन, सारयुक्त तथा विलक्षण थे। जिनकी रमणीय शैली मनुष्यों के मानस में आज भी तरंगित होती है, उन कनक तुल्या साध्वीप्रमुखाजी को हमारा सम्यग् नमन।

स्मारं स्मारं पुनरपि पुनः प्रेरणानुग्रहौ ते
जिह्वावाग्मी विरहितगिरा जातु वा लल्लरी सा।
यानि क्वाहं किमपि करवै किं ब्रवै कां विलोकै?
पृच्छा चित्ते स्फुरति सततं चोत्तरं देहि वैहि ॥

अर्थ—आपकी प्रेरणा एवं कृपाभावना को पुनश्च याद करके मेरी वाक्पटु रसना कभी वाणीशून्य हो जाती है तो कभी रूक—रूककर बोलने वाली। कहाँ जाऊँ, क्या करूँ? क्या कहूँ और किसे देखूँ? यह पृच्छा मन में निरंतर स्फुरित होती रहती है, आओ और मुझे समाधान दो।

— प्रस्तुति : साध्वी स्वस्तिकप्रभा



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □ बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(३४) स्वयं बुद्धा भवन्त्येके, केचित् स्युर्बुद्धबोधिताः।
केचित् प्रत्येकबुद्धाः स्युः, बोधिर्नायाना भवेत्॥

संसार का अंत करने वालों में कुछ जीव 'स्वयंबुद्ध' होते हैं, कुछ 'बुद्धबोधित' होते हैं और कुछ 'प्रत्येक-बुद्ध' होते हैं। इस प्रकार बोधि की प्राप्ति के अनेक मार्ग हैं।

बोधि का अर्थ है रत्नत्रयी-सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान और सम्यग् चारित्र्य। इन तीनों का योग संसार का अंत करने वाला है। सम्यग् दर्शन सबका मूल है। बोधि-प्राप्ति सहज नहीं है। वह कुछ व्यक्तियों को बिना उपदेष्टा के प्राप्त हो जाती है। वे 'स्वयंबुद्ध' कहलाते हैं। सभी तीर्थंकर स्वयंबुद्ध होते हैं। यह पूर्व कर्म की अल्पता पर और वर्तमान की महान् तपस्या पर आधरित है।

कर्म-क्षय के बिना आत्मा की शुद्धि नहीं होती। अशुद्ध आत्मा में धर्म (बोधि) का अंकुर फूटता नहीं। दूसरी श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं जो किसी उपदेष्टा के द्वारा धर्म को स्वीकार करते हैं। स्वयंबुद्ध कम होते हैं, अधिकांश व्यक्ति उपदेश से सत्य-मार्ग प्राप्त करते हैं। सत्यासत्य का निर्णय करने में वे स्वतंत्र होते हैं। उपदेशक उन्हें तत्त्व-दर्शन देते हैं। तत्त्व-ज्ञान को पाकर वे मुक्ति की ओर अपने आप ही प्रेरित होते हैं और दुःखों का अंत करते हैं। वे बुद्ध-बोधित होते हैं।

तीसरी श्रेणी के व्यक्तियों को बोधि के लिए बाहरी निमित्त मिलता है। वे कोई एक विशिष्ट घटना से प्रतिबुद्ध हो जाते हैं। वे 'प्रत्येक बुद्ध' कहलाते हैं। मिट्टी कुंभकार, चाक आदि निमित्त को पाकर घड़े आदि प्रकारों में रूपांतरित हो जाती है, इसी प्रकार अंतश्चेतना बाहरी कारणों से प्रबुद्ध हो जाती है। वे हैं निमित्त, न कि उपादान। निमित्त का कोई अस्तित्व नहीं रहता। महात्मा बुद्ध रोगी, वृद्ध और शव का योग पाकर संसार से विरक्त बन गए। महाराज भर्तृहरि अमरफल को देख संसार से उद्विग्न हो गए। जैन आगमों में ऐसी कई घटनाएँ हैं। भरत चक्रवर्ती शरीर-प्रेक्षा करते-करते अनित्य-भाव में लीन हो गए। नमि राजर्षि—'एक चूड़ी का शब्द नहीं होता, अनेक होती हैं तब होता है', यह सोच एकत्व-भावना में लीन हो गए। 'जो वृक्ष प्रातः फूल और पत्तों से सुशोभित था, वही अब असुंदर-सा प्रतीत होता है। जीवन का भी यही क्रम है। पहले सरस लगता है और बाद में नीरस—इसी भावना से नग्नति नृप बोधि को प्राप्त हो गए। ये घटनाएँ प्रत्येक-बुद्धत्व की हैं। (क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनू' □ धर्म बोध

भाव धर्म

प्रश्न ५ : क्या भावयुक्त व भावशून्य की गई क्रिया के प्रायश्चित्त में अंतर रहता है?

उत्तर : भावयुक्त व भावशून्य की गई असत् क्रिया के प्रायश्चित्त में बहुत अंतर रहता है। तीव्र परिणाम में कोई असत् क्रिया घटित हुई हो, तो उसका उत्कृष्ट प्रायश्चित्त नई दीक्षा ग्रहण करने तक आ सकता है। मंद परिणाम में कोई असत् क्रिया हो जाती है, तो उसका प्रायश्चित्त हल्का होता है।

प्रश्न ६ : भावों की उत्कृष्ट निर्मलता और मलिनता के लिए क्या मजबूत संहनन अपेक्षित रहता है?

उत्तर : भावों की उत्कृष्ट निर्मलता के लिए सर्वाधिक मजबूत वज्रत्रयभनाराच संहनन की अपेक्षा रहती है। इसी संहनन वाला मोक्षगामी हो सकता है। उत्कृष्ट मलिनता अर्थात् सातवीं नरक तक ले जाने में भी यही संहनन उत्तरदायी है।

प्रश्न ७ : क्या श्रेणी आरोहण के समय भावों की ही प्रधानता रहती है?

उत्तर : श्रेणी आरोहण के समय भावों की ही प्रधानता रहती है, वचन और काया की क्रिया भी साथ में हो सकती है।

प्रश्न ८ : क्या चक्रवर्ती भरत को अपने महल में केवल ज्ञान की उपलब्धि भावों से हुई?

उत्तर : चक्रवर्ती भरत ने अपने महल में अनित्य अनुप्रेक्षा की, जिससे भावों में चारित्र्य आया और श्रेणी आरोहण करते हुए केवल ज्ञान की भूमिका तक पहुँच गए। उनके केवल प्राप्ति में भावों की ही मुख्यता रही। माता मरुदेवी की भी मुक्ति भाव-निर्मलता से हुई। वह प्रथम गुणस्थान से सातवें, फिर श्रेणी चढ़ते हुए तेरहवें गुणस्थान में सर्वज्ञ बनीं, तत्क्षण योग निरुद्ध कर सिद्ध, बुद्ध व मुक्त बनीं।

प्रश्न ९ : मोक्ष-मार्ग में भाव को अतिरिक्त महत्त्व क्यों दिया गया है?

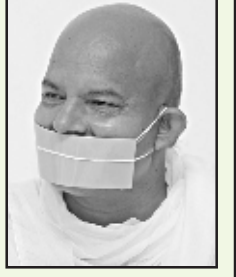
उत्तर : मोक्ष मार्ग की आराधना में भाव (शुभ) का बहुत महत्त्व है। किसी भी धार्मिक क्रिया की गुणवत्ता तभी बढ़ती है जब उसके साथ भाव जुड़ा होता है। भाव शून्य क्रिया द्रव्य क्रिया होती है, अतः वह अल्प फलदायिनी ही बनकर रह जाती है। भाव से जुड़ी क्रिया असाधारण फल देने वाली होती है। (क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

□ आचार्य महाश्रमण

आचार्य तुलसी



तेरापंथ

स्थानकवासी संप्रदाय के आचार्य रुघनाथजी के शिष्य 'संत भीखणजी' (आचार्य भिक्षु) ने विक्रम संवत् १८१७ में तेरापंथ का प्रवर्तन किया। आचार्य भिक्षु ने आचार-शुद्धि और संगठन पर बल दिया। एकसूत्रता के लिए उन्होंने अनेक मर्यादाओं का निर्माण किया। शिष्य-प्रथा को समाप्त कर दिया। थोड़े ही समय में एक आचार्य, एक आचार और एक विचार के लिए तेरापंथ प्रसिद्ध हो गया। आचार्य भिक्षु आगम के अनुशीलन द्वारा कुछ नए तत्त्वों को प्रकाश में लाए। सामाजिक भूमिका में उस समय वे कुछ अपूर्व-से लगे। आध्यात्मिक दृष्टि से वे बहुत ही मूल्यवान् हैं। कुछ तथ्य वर्तमान समाज के पथ-दर्शक बन गए हैं।

राजर्षि प्रसन्नचंद्र

प्रसन्नचंद्र पोटनपुर नगर के अधिशास्ता थे। भगवान् महावीर का उपदेश सनकर वैराग्य जगा। अपने लघु पुत्र को राज्य का भार सौंपकर संयमी बन गए। तपः साधना में लीन रहने लगे।

एक बार भगवान् महावीर के साथ विहार करते हुए राजगृह में पधारे। वे समवसरण के बाहर सूर्य के सामने ऊर्ध्वबाहु ध्यानस्थ खड़े आतापना ले रहे थे। महाराजा श्रेणिक अपने दल-बल सहित प्रभु के दर्शनार्थ आया। सुमुख, दुर्मुख दोनों दूत भी साथ थे। जब दुर्मुख ने ध्यानस्थ मुनि को देखा तब सुमुख से कहा—'अरे सुमुख! देखो तो सही। यह ढोंगी मुनि यहाँ ध्यान करके खड़ा है। अपने पुत्र के प्रति इसके दिल में तनिक भी दया नहीं है। उधर नगर पर दुश्मन राजा ने आक्रमण कर दिया है। वहाँ उसका रखवाला कौन है? राज्य छीन लिया जाएगा। इसकी पत्नी का भी बुरा हाल होगा।'

दुर्मुख के ये शब्द कान में पड़ते ही प्रसन्नचंद्र मुनि का ध्यान भंग हो गया। राज्य, पुत्र और पत्नी की चिंता में आर्तध्यान में उलझ गए। मन ही मन शत्रुओं से युद्ध करने लगे।

महाराज श्रेणिक ने उधर प्रभु के पास पहुँचकर उन मुनि की गति के संबंध में पूछा तब प्रभु ने कहा—यदि इन्हीं परिणामों में उनका मरण हो तो वे प्रथम नरक में जाएँगे। श्रेणिक आश्चर्य में था। उधर मुनि की भावना क्रूर हो रही थी। इधर श्रेणिक के प्रश्नों के उत्तर में दूसरी, तीसरी बताते-बताते सातवीं नरक प्रभु ने बता दी।

उधर मुनि मन ही मन युद्ध में ऐसे रत हो गए कि शत्रु को मारने हेतु अपने सिर से उतार कर मुकुट फेंकना चाहा। जब सिर पर हाथ पड़ा तब भान हुआ कि मैं तो मुनि हूँ। किसका राज्य? किसका पुत्र किसका कौन? सारे संबंध झूठे हैं। यों विचार करते ही मनोभाव बदले। सातवीं नरक से चढ़ते-चढ़ते सर्वार्थसिद्ध तक उनके परिणाम पहुँच गए। मुनि भावों से निरंतर ऊँचे और ऊँचे चढ़ रहे हैं।

इतने में सहसा राजा श्रेणिक को देव दुन्दुभियाँ सुनाई दीं। पूछने पर प्रभु ने कहा—'प्रसन्नचंद्र मुनि ने केवलज्ञान प्राप्त कर लिया।' श्रेणिक के रोम-रोम यह संवाद सुनकर पुलकित हो उठे। प्रभु को वंदन करके अपने महलों की ओर बढ़े। जाते-जाते मन-ही-मन सोच रहे हैं—प्रसन्नचंद्र मुनि अपने स्थान से हिले-डुले नहीं। प्रारंभ से अंत तक वैसे के वैसे खड़े नजर आ रहे हैं पर भावों से कहाँ-से-कहाँ पहुँच गए। मेरा वह दुर्मुख दूत भी अपने खराब मुँह से बात कहकर मुनि की भावना को बिगाड़ने में कैसे निमित्त बन गया। (क्रमशः)

अणुव्रत अमृत महोत्सव के विविध आयोजन

दिल्ली

अणुव्रत आंदोलन के ७५वें वर्ष के शुभारंभ पर अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा अणुव्रत अमृत रैली का आयोजन विवेक विहार फेस-२ स्थित सरोज मोंटेसरी स्कूल एवं दिल्ली नगर निगम स्कूल द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। जिसमें लगभग १५० बच्चों ने भाग लिया। दिल्ली नगर निगम स्कूल की पूर्व प्रिंसिपल पुष्पा ने अणुव्रत ध्वज दिखाकर रैली का शुभारंभ किया।

अणुव्रत अमृत रैली विभिन्न मार्गों से होती हुई अणुव्रत उद्घोषों, तख्तियों के साथ दिल्ली नगर निगम स्कूल पहुँचकर एक सभा के रूप में परिवर्तित हुई। अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली के मंत्री धनपत नाहटा ने अणुव्रत गीत के संगान के द्वारा सभा का शुभारंभ किया। पूर्व प्रिंसिपल पुष्पा ने बच्चों को अणुव्रत आचार संहिता के ११ नियम व विद्यार्थी वर्गीय अणुव्रत के संकल्प करवाए। उन्होंने बच्चों से नशा नहीं करने व पर्यावरण के संरक्षण लिए जागरूक रहने का आह्वान किया। कार्यक्रम में कार्यसमिति सदस्य एवं सरोज मोंटेसरी स्कूल के निदेशक रवि शर्मा का विशेष सहयोग रहा। दोनों स्कूलों की अध्यापिकाओं का भी पूर्ण सहयोग रहा। अणुव्रत समिति ट्रस्ट के मंत्री धनपत नाहटा ने आभार ज्ञापित किया।

पाली

अणुव्रत समिति, पाली के द्वारा अणुव्रत अमृत महोत्सव के शुभारंभ के लिए अणुव्रत अमृत रैली की तैयारियों जोर-शोर से की जा रही हैं, इसमें अणुव्रत अमृत महोत्सव के विशिष्ट कार्यक्रमों के साथ ही नियमित प्रकल्प भी शामिल किए जाएंगे मानव मात्र के कल्याण को लक्षित कर इस आंदोलन से जुड़कर स्वयं और इस दुनिया को श्रेष्ठ की ओर अग्रसर करना ही अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी का लक्ष्य है।

सचिव प्रियंका चोपड़ा ने बताया कि प्रत्येक मंगलवार को संयम दिवस के रूप में मनाना अणुव्रत अमृत महोत्सव का नियमित लक्ष्य रहेगा, जिसके अंतर्गत एक घंटा मौन साधना, नशे से मुक्त रहना एवं मांसाहार नहीं करना १ दिन के लिए व्यक्ति को ब्यसनों से दूर रखने की प्रेरणा देते हुए उसे जीवन में नई दिशा एवं समाज सुधार का कार्य करने की ओर प्रेरित किया जाना ही मुख्य लक्ष्य रहेगा। इसी संदर्भ में पाली जिला कलेक्टर नमित मेहता के करकमलों से अणुव्रत अमृत रैली एवं अणुव्रत अमृत महोत्सव के बैनर का विमोचन कराया गया और उन्हें मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। अध्यक्ष सुबुद्धि समदड़िया, कोषाध्यक्ष बसंत सोनी मंडिया अन्य सदस्य रमेश बरड़िया, मूलचंद संकलेचा, पुष्पा परिहार राजेंद्र समदड़िया आदि उपस्थित रहे।

विजयवाड़ा

विजयवाड़ा में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत अमृत महोत्सव का शुभारंभ अणुव्रत समिति, विजयवाड़ा द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी सी०वी० रेणुका रही। कार्यक्रम में समाज के सभी विशिष्टजन भी उपस्थित रहे और विशाल जनमेदिनी रही, जिसमें वन टाउन स्थित संभवनाथ मूर्तिपूजक जैन संघ का विशाल प्रवचन सभागार भरा हुआ था।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातःकाल प्रारंभ 'अणुव्रत अमृत रैली' से हुआ, जिसमें विद्यार्थियों की अच्छी संख्या रही। जिसमें कमलेश शर्मा, आयकर अधिकारी, मुख्य अतिथि के रूप में रहे। शहर के विभिन्न मार्गों से अणुव्रत के घोषों का उच्चारण करते हुए रैली संभवनाथ परिसर में पहुँचकर सभा में परिवर्तित हो गई।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि अणुव्रत जन-जन को नैतिकता और संयम का अमृत पान करा रहा है। अणुव्रत धर्म के शुद्ध स्वरूप को उजागर करता है तथा आचार प्रधान धर्म की प्रतिष्ठा पर बल देता है। आचार्यश्री तुलसी क्रांतिकारी धर्माचार्य थे। उन्होंने अणुव्रत के माध्यम से सामाजिक क्रांति की। अणुव्रत को युग धर्म या मानव धर्म का पर्यायवाची कह सकते हैं।

मुनिश्री ने आगे कहा कि अणुव्रत आंदोलन का लंबा कालखंड बीत गया, प्रारंभ हुए को ७४-७५वें वर्ष प्रारंभ हो रहा है। ऐसे आंदोलन ना के बराबर होंगे जिन्हें इतना समय बीत गया हो। वर्तमान में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के आध्यात्मिक साये में यह अणुव्रत का कार्य आगे बढ़ रहा है। अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष निष्पत्तिदायक बनें। अणुव्रत समिति, विजयवाड़ा अच्छा कार्य कर रही है।

मुख्य अतिथि सी०वी० रेणुका (जिला शिक्षा अधिकारी) ने अणुव्रत के प्रति महत्त्वपूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए अणुव्रत गीत को स्कूलों में प्रसारित करने का आश्वासन भी दिया।

कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के सदस्यों ने 'अणुव्रत गीत' का संगान किया। अणुविभा के आंध्रा प्रभारी विमल बैद ने 'अणुव्रत आचार संहिता' का वाचन एवं उद्गार व्यक्त किए। महासभा राज्य प्रभारी नरेंद्र नाहटा, गुंटूर सभा से अंबानी, तेरापंथ सभा, विजयवाड़ा अध्यक्ष अशोक बागरेचा, तेमम अध्यक्ष लता बैद, संजय छाजेड़ आदि ने विचार रखे। अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेंद्र कोठारी ने स्वागत भाषण व अणुव्रत पर विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति मंत्री निर्लेश डागा ने किया।

सरदारशहर

सफल विद्यार्थी जीवन सुदृढ़ भविष्य की गारंटी होता है। सफलता के लिए एकाग्रता अति आवश्यक है। विद्यार्थियों में एकाग्रता व व्यक्तित्व निर्माण में अणुव्रत के संकल्प बहुत सहायक होते हैं। सुप्रसिद्ध साहित्यकार व अणुव्रत विश्व भारती की संगठन मंत्री डॉ० कुसुम लुनिया ने निम्न विचार राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय के हॉल में छात्राओं व शिक्षकों के मध्य रखे। संकल्पों से सफल हुई अपने जीवन यात्रा से बालिकाओं को परिचित करवाते हुए अणुव्रत आचार संहिता के संकल्प सभी को दिखाए।

अणुव्रत समिति, सरदारशहर के तत्वावधान में आयोजित इस संगोष्ठी में दिल्ली से समागत प्रमुख समाज सेवी व अणुविभा कार्य समिति सदस्य डॉ० धनपत लुनिया ने मुख्य अतिथि के रूप में प्रशिक्षकों व विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान द्वारा सफलता के सूत्रों से रूबरू करवाया एवं विद्यालय में प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान लगवाने की अनुशंसा की।

सुमधुर अणुव्रत गीत से कार्यशाला का शुभारंभ उपाध्यक्ष सुमन भंसाली ने किया। स्वागत उपमुख्य अध्यापिका कंचन स्वामी ने किया एवं संचालन अणुव्रत समिति के अध्यक्ष व राजेंद्र विद्यालय के प्रिंसिपल पृथ्वीसिंह बीदावत ने किया।

मुंबई

सभी कैदियों को नशा से दूर रहने की एवं सामाजिक जीवन जीने की प्रेरणा दी गई। कार्यक्रम को सफल बनाने में पी०पी० कदम मेम एवं ए०टी० पाटिल आदि का सहयोग रहा।

इस अवसर पर अणुविभा उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, मुख्य वक्ता मनोहर गोखरू, दलपत सिंह राव (भारतीय जनता पार्टी दक्षिण मध्य जिला अध्यक्ष राजस्थानी प्रकोष्ठ), अणुव्रत समिति मुंबई अध्यक्ष कंचन सोनी, मंत्री वनिता बाफना, कोषाध्यक्ष लतिका डागलिया, मधु मेहता आदि की सराहनीय उपस्थिति रही।

'आम बने या खास बने' कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, जसोल द्वारा 'आम बने या खास बने' मुनि सुमति कुमार जी के सान्निध्य में व्यक्ति विकास कार्यशाला का आयोजन किया गया।

दो घंटे कार्यशाला में मुख्य वक्ता व्यक्तित्व विकास आयाम के राष्ट्रीय संयोजक दिनेश बुरड़ व वक्ता सोशल मीडिया संवाददाता ललित छाजेड़ ने कैसे आम कर अपने जीवन को खास बना सकता है, कैसे अपने जीवन में दो वक्ताओं ने खास बनने की प्रेरणा दी। तेयुप, जसोल अध्यक्ष तरुण भंसाली ने वक्ताओं का स्वागत किया और अपने विचारों की प्रस्तुति दी। आभार व्यक्त तेयुप मंत्री अमित सुराणा ने किया।

समणी जी का स्वागत समारोह

गुवाहाटी।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने गुवाहाटी समाज पर महती कृपा करते हुए समणी निर्देशिका विपुलप्रज्ञा जी एवं समणी आदर्शप्रज्ञा जी का प्रवास केंद्र गुवाहाटी को प्रदान किया है, जिससे संपूर्ण समाज में हर्ष का वातावरण है। इस अवसर पर स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में समणीवृंद का स्वागत समारोह आयोजित हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ अर्हम भजन मंडली द्वारा मंगलाचरण से हुआ। इस अवसर पर समणीजी ने कहा कि हमें अध्यात्म के द्वारा अपनी आत्मा को प्रसन्न रखने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि अपने घर-परिवार में संस्कार रूपा बीज फलता रहे, ऐसा प्रयास करना चाहिए। समणी आदर्शप्रज्ञा जी ने अपने संबोधन में समणीजी के प्रवास का पूर्ण लाभ लेने का आह्वान किया।

इस अवसर पर जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष विजय कुमार चोपड़ा, तेरापंथी सभा के मंत्री रायचंद पटावरी, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष मंजु भंसाली, तेयुप के अध्यक्ष मनीष कुमार सिंधी, टीपीएफ के अध्यक्ष सीए संतोष पुगलिया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बजरंगलाल डोसी एवं ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका कांता देवी बच्छावत एवं तेरापंथ साहित्य सेवा के संयोजक दिलीप दुगड़ ने अपने वक्तव्य के माध्यम से समणीवृंद का स्वागत-अभिनेदन किया। सभा का संचालन तेरापंथी सभा के कार्यकारिणी सदस्य निलेश पगारिया ने किया।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी का प्रवेश

तेलंगाना।

चेन्नई, साहूकारपेट में उपलब्धियों भरा चातुर्मास संपन्न कर आचार्यश्री महाश्रमण जी के निर्देशानुसार सिकंदराबाद, हैदराबाद चातुर्मास के लिए साध्वीश्री जी ने अपने सहवर्तिनी साध्वीवृंद के साथ प्रस्थान किया। मार्गवर्ती श्रद्धा क्षेत्रों का स्पर्श करते हुए एवं प्रवास करते हुए आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा शहर में मर्यादा महोत्सव किया।

प्रवासित सभी क्षेत्रों के श्रद्धालु श्रावक-परिवार ने अपने दायित्व का सजागता से निर्वहन किया। २०२३ के मर्यादा महोत्सव पर युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सिकंदराबाद चातुर्मास के लिए साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के नाम की उद्घोषणा की। प्रबुद्ध चातुर्मास प्राप्त कर श्रावक समाज ने प्रसन्नता व्यक्त की। विहार सेवा में श्रावकों एवं श्राविकाओं का आगमन निरंतर जारी है।

हरी-भरी धरती का सुरम्य दृश्य एवं आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना प्रवासियों के मन में श्रद्धाभाव देखते बनता है। इस यात्रा में अनेक शैक्षणिक संस्थानों में साध्वीवृंद का प्रवास हुआ। उनके मन में उठी जिज्ञासाओं का साध्वीश्री द्वारा समाधान किया गया। संघीय प्रभावना, जन-संपर्क और मानव मात्र को धर्म की प्रेरणा प्रदान करने वाली यह यात्रा काफी प्रभावक बन रही है।

तेलंगाना प्रदेश के अवसर पर श्रावक भीखमचंद बैद, उपासक राजेश भूतेड़िया, श्राविका पानादेवी गोलछा एवं विमला देवी उपस्थित रहीं। साध्वीश्री जी ने सीमा प्रवेश के अवसर पर मंगलपाठ के साथ मंगलभावना व्यक्त की।

सकारात्मक सोच से कठिन परिस्थितियाँ भी होती आसान

चंडीगढ़।

सकारात्मक सोच से ही मनुष्य यह निर्धारित कर सकता है कि भविष्य में वह कैसा व्यक्ति बनता है। जैसी हमारी सोच होती है हम आगे चलकर वैसे ही बनते हैं,

जिस तरह से हमारे विचार होंगे उसी तरह से हम होंगे। अब यह हमको सोचना है कि सकारात्मक विचार किस तरह हमारे जीवन को सफल बना देता है। सकारात्मक सोच की शक्ति बहुत बड़ी ताकत होती है। हम जिस विचार से अपने मन को मजबूती देते हैं, उसी मजबूती से हम कार्य कर सकते हैं। यह विचार मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन के तुलसी सभागार में व्यक्त किए।

मुनिश्री ने कहा कि विचारों की ताकत से आप जीवन में सब कुछ कर सकते हैं, चाहे वो कितना भी बड़ा काम क्यों न हो। सकारात्मक सोच की ताकत से आप किसी भी नकारात्मक विचार वाले व्यक्ति को सुधार सकते हैं। यह आपको किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए आपको हमेशा प्रोत्साहित करती रहती है। सकारात्मक विचार ही आज के समय में सफल व्यक्ति की पहचान है।



शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के प्रति उद्गार

विलक्षणताओं की वर्णमाला

□ साध्वी शुभप्रभा □

एक गुरु और एक विधान के नक्शेकदम पर सर्वात्मना समर्पण भाव से चलते हुए अपने व्यक्तित्व, कर्तृत्व एवं नेतृत्व से संघीय क्षितिज पर हस्ताक्षर करने वाली प्रभावक साध्वीप्रमुखाओं में एक विभूति है स्वनामधन्या साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी! विलक्षणताओं की वर्णमाला में गुंफित वे एक ऐसी महाश्रद्धा है जिनका नाम स्मृति पटल पर उभरते ही आँखें अपलक हो जाती हैं, हाथ जुड़ जाते हैं, हृदय में सरसराहट महसूस होती है।

माथा स्वयमेव झुक जाता है, चिंतन के वातायन से यारों की बारातें उतरने लगती हैं। रक्त प्रवाह में वेग आ जाता है, कर्मजा शक्ति जाग जाती है तथा उनकी गुरुनिष्ठा, संघनिष्ठा, आत्मनिष्ठा और अनुशासननिष्ठा अनकहे ही बहुत कुछ कह जाती है। उनकी मूक वाणी गुमराहों को राह, सोए को जागृत, प्रमत्त को अप्रमत्त, अकर्मण्य को कर्मण्य बनने का दिव्य संदेश दे रही है। इस एक वर्षीय प्रलंब काल के दौरान भी वे दिल और दिमाग पर इस कदर प्रतिष्ठित रही कि हर नयन में उनका प्रतिबिंब है, हर धड़कन में उनकी आहट है, हर शब्द में उनका भाव मुखरित है, हर गतिविधि में उनकी सक्रियता जीवंत है, अनुभूतियों के संग्रहालय में वे हर ओर खड़ी, बैठी कार्य करती नजर आती हैं। प्रस्तुत है बिंब और प्रतिबिंब की कुछ झलकियाँ—

ऐसे बदला प्रवाह : समण दीक्षा लेने के कुछ समय पश्चात ही मेरे टी०बी० हो गई। रीढ़ की हड्डी उससे प्रभावित हुई। विविध आयामी उपचार चला। दर्द के कारण नीचे बैठना, झुकना, वजन उठाना आदि पर प्रतिबंध लगा। पूरे दिन सीधा सोया रहना भी मुश्किल था। यद्यपि समणीजी अपनी ओर से जागरूकतापूर्वक चिंत समाधि पहुँचाने के लिए प्रयासरत थीं। मुझे किसी तरह की कमी महसूस नहीं होने देती। चिकित्सा की दृष्टि से कहीं आना-जाना होता, उसके लिए समुचित व्यवस्थाएँ कर दी जातीं। बावजूद इसके मेरा मन बेचैन रहता। बुझा दीया प्रकाश देगा भी कैसे? तन के साथ मन भी रुग्ण हो गया। दीक्षा लेते ही मैं पराश्रित जो बन गई। अपना निजी काम भी नहीं कर सकती। मैंने क्या लक्ष्य बनाया था पर हो क्या गया? कैसे जीवन-गाड़ी पटरी पर चल पाएगी? हताशा ने घेरा डाला। उलझन भरी स्थिति में मैंने एक निर्णय सा कर लिया कि अब मुझे संलेखना कर लेना चाहिए। पर मन की बात किसे और कैसे कहूँ, यह समस्या मेरे सामने थी।

एक दिन स्वयं आदरास्पद साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने पूछ लिया—कैसे हो? सहानुभूतिपूर्ण एवं आत्मीयता भरे शब्द सुनकर आँखें नम हो गईं। चेहरे के माध्यम से भावों का भूगोल पढ़ने में माहिर आपश्री ने कहा कि क्या बात है? कोई दुविधा है तो बताओ।

आश्वस्त पाकर मैंने हृदयगत भावों को निवेदित किया। आपने कहा कि इतने दिनों में ही ऐसा सोच लिया। देखो, यह शरीर तो मशीन की तरह है। जैसे मशीन का कलपुर्जा खराब होने पर उसको ठीक करवाया जाता है, उसे फेंका तो नहीं जाता। वैसे ही असातवेदनीय के उदय से बीमारी आई है तो उसे प्रसन्न मन से स्वीकार करो। रोग के साथ मैत्री करो। कर्जा उतारने जैसा महसूस करो। गुरु कृपा से सब ठीक होगा, ऐसा चिंतन करो।

ऐसे प्रवर पाथेय को पाकर मेरे विचारों का प्रवाह बदला। सम्यक् दिशा निर्देश मिलते ही मैं संतुलित हो गई।

लेखनी चलती रहे : परमपूज्य गुरुदेवश्री तुलसी के मुखकमल से १७ नवंबर, १९६१ को सामायिक चारित्र की शपथ लेकर मैंने श्रेणी आरोहण किया। पूज्यप्रवर से ओज आहार ग्रहण करने के पश्चात् हम नवदीक्षित साध्वियों आपश्री की अग्रगामिता में सेवा केंद्र (चेइयं) पहुँची। उस समय लाडलू में केंद्र की चाकरी थी। इसलिए पहले सेवाग्राही साध्वीवृंद को आहार करवाया जाता था। हम आदरास्पद महाश्रमणीजी की मंगल उपनिषद में आसीन थी।

आपश्री ने मेरी ओर देखा, संकेत किया। मैं तत्काल उपपात में पहुँची। एक छोटी डायरी और पेन आपके हाथ में था। मुस्कराते हुए आपने मुझे फरमाया—लो। मैंने उस आशीर्वाद को सहर्ष लिया। उस समय तो मैं उन्हें देने का रहस्य नहीं समझ पाई कि ग्रास देने से पूर्व ये क्यों दिए गए?

कुछ दिनों के पश्चात् मैंने आपश्री से पूछ ही लिया—महाराज! आपश्री ने प्रथमतया डायरी और पेन मुझे प्रदान किया। यद्यपि वह मेरी अनमोल निधि है पर जिज्ञासा है कि ग्रास देने से पूर्व क्यों दिया? आपने मुझे समाहित करते हुए कहा ताकि लेखनी चलती रहे।

मेरे स्मृति पटल पर समण श्रेणी में व्यतीत वर्ष चलचित्र की भाँति उभर आए। जब आपश्री का मनोनयन दिवस आता और मैं आपके पास कोई संकल्प लेने आती तो आप मुझे प्रायः महीने में एक लेख लिखने का कहते। उससे कई लेखों का संग्रहण हो गया। इस क्षेत्र में मैं थोड़ी-बहुत एबीसीडी सीख पाई, वह सब उसी आशीर्वाद की फलश्रुति है।

फार्मूले परीक्षण के : मैंने देखा असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री जी एक कुशल एवं समृद्ध परीक्षक थी। परीक्षण के उनके फार्मूले कई रूपों में रूपायित होकर सामने आते। कभी वे शुद्ध उच्चारण सहित कंठस्थ ज्ञान सुनकर, कभी किसी श्लोक या गाथा का अर्थ करवाकर, कभी डिक्टेसन देकर, कभी तत्काल भाषण बुलवाकर, कभी कुछ लिखने का निर्देश देकर, कभी समस्या-पूर्ति के लिए पंक्ति निर्धारित कर, कभी गीत-कविता लिखवाकर, कभी रंगाई-सिलाई करवाकर वे व्यक्तित्व का परीक्षण कर लेती, प्रेरणाएँ देती तथा प्रोत्साहित एवं प्ररस्कृत भी करवाती।

उपरोक्त बिंदुओं को सत्यापित करने के लिए मेरे सामने कई संदर्भ हैं। उनमें से एक प्रसंग है सन् १९६४ के जयपुर प्रवास का। दिल्ली चातुर्मास से पूर्व मानवता के महामंगल गुरुदेवश्री तुलसी नव मनोनीत आचार्यश्री महाप्रज्ञ के साथ राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी में पधारे। रास्ते में अचानक पूज्यप्रवर के स्वास्थ्य की स्थिति चिंतनीय बन गई। डॉक्टर के निर्देशानुसार गुरुदेव के लिए विश्राम जरूरी था। इसलिए पूर्व निर्धारित स्वागत कार्यक्रम आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आयोजित हुआ। उसमें श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्री जी का उद्बोधन भी होना था। पर वे गुरुदेव की उपासना में समासीन थी। उन्होंने वहीं से एक स्लिप मेरे नाम प्रेषित करवाई, जिसमें लिखा था—अभी मैं कार्यक्रम में नहीं आ सकूँगी, इसलिए यदि नाम आए तो तुम्हें बोलना है। पढ़कर मैं स्तब्ध रह गई। परमपूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि, मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत, अनेक विशिष्ट व्यक्तित्व, विशाल परिषद सामने थी। मैं क्या और कैसे बोलूँगी? एक बारगी तो मन सशक्त हुआ। मैं तो विज्ञप्ति के लिए मैटर लिखने आई थी। पास में कुछ भी तो नहीं था। तत्काल मेरे मस्तिष्कीय पटल पर आपश्री द्वारा कथित एक वाक्य—जो चोंच देगा, वह चुग्गा भी देगा, उभर आया। बस इसी आत्मविश्वास और अनुप्रेक्षा के साथ नाम आने पर मैं खड़ी हो गई और आपश्री की आज्ञा का परिपालन कर पाई।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने स्नेहिल दृष्टि से मेरी ओर देखा। साध्वियों को आज की बात बताई और मुझे पुरस्कृत भी किया। कृतज्ञ भाव व्यक्त करते हुए मैंने निवेदन किया—‘मत्थएण वंदामि! आज आपने जैसी मेरी परीक्षा ली है। कृपा करके ऐसी परीक्षा फिर मत लेना। मेरी बात सुनते ही परिषद खिलखिला उठी।

ऐसी महानता, विशालता, उदारता की जानी-मानी मिसाल शासनमाता ने अपनी थाली में परोसा अन्न, प्याले का पानी, पहनने के वस्त्र, निजी प्रयोग में आने वाले उपकरण, लेखन व वक्तव्य के लिए अपनी डायरी कितनों को ही दी होगी लेने वाली उनमें एक मैं भी हूँ।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री जी
की वार्षिक पुण्यतिथि पर

अहंम

● साध्वी रौनकप्रभा ●

शासन मा साध्वीप्रमुखा, तेरे गुण गौरव गाएँ
श्रद्धांजलियाँ चरणों में, स्मृतियाँ रह-रह कर आएँ

हर दिल की धड़कन को समझ पीड़ा हर लेती,
जन-जन के जीवन में रोशनी का दीया करती,
डगमग-डगमग कदमों को, मंजिल पार पहुँचाए।

हमारे सामने आदर्श, तेरे जीवन की पोथी,
युगों तक हम पाएँगे, तुमसे आत्मिक ज्योति,
पौरुष और पुण्य की निर्मल निश्चल धाराएँ।

हमेशा ऋणि रहेगा संघ, सेवाएँ तेरी अनमोल,
हो जाते आश्वस्त हृदय सुन तेरे मीठे बोल,
बहुरत्ना महाश्रमणीवरा, कैसे हम भुला पाएँ।

शबरी को देने दर्शन, पधारे रघुकुल के नंदन,
गुरु के पाकर शुभ दर्शन, हर्षित तेरा हर स्पंदन,
वार्षिक पुण्यतिथि माँ की, सविनय शीघ्र झुकाए---

लय : मुझे तुम याद करना----

अहंम

● साध्वी अमितरेखा ●

निहारा महाश्रमणी दरबार।
शासनमाता जी से सबको, मिलता स्नेह अपार।।

कोलकत्ता की महानगरी में जन्म हुआ तुम्हारा,
माता-पिता के लाड़-प्यार में बचपन बीता सारा,
चंदेरी का संस्कारी है, पूरा बैद परिवार।।

तुलसी प्रभु के श्री चरणों में संयम पथ अपनाया,
विनय समर्पण देख तुम्हारा, गुरु दिल में हराया,
साध्वीप्रमुखा पद का तुमको, मिलता है उपहार।।

तीन-तीन आचार्यों की, किरपा तुमने पाई,
महाशक्ति से ऊर्जा पाकर, रही सदा तरुणाई,
गुरु सन्निधि का स्वप्न निराला, देखो हुआ साकार।।

भक्त उदाई को तारन, जैसे महाप्रभु जी आए,
महाश्रमण भी तीव्र गति से दिल्ली में पधराए,
सहनशीलता बड़ी विलक्षण, भरती है संस्कार।।

लय : यही है जीने का विज्ञान---

♦ यदि दुनिया में धोखा न हो तो दुनिया बहुत अच्छी बन सकती है। ईमानदारी के प्रति सघन आस्था हो तो अनेकानेक समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

— आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मयुद्ध कर संसार सागर तरने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण



खेड़ब्रह्मा, २३ फरवरी, २०२३

भैक्षव शासन के एकादशम महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ११ किलोमीटर विहार कर उत्तर गुजरात के खेड़ब्रह्मा नगर में दो दिवसीय प्रवास हेतु पधारे। मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए परम वंदनीय ने फरमाया कि हमारी दुनिया में शांति भी रहती है, शांति अभिष्ट भी है, हम सब शांति में रहें। परंतु युद्ध भी दुनिया में

कभी-कभी हो जाता है। जिसमें कई लोग मर सकते हैं, संपत्ति का नुकसान हो सकता है।

इतनी सब बातें होने पर भी अंत में समझौता होता है, युद्ध-विराम की बात होती है। यह सब बाहर का युद्ध है। जैन आगम आयारों में निःशस्त्रीकरण की बात भी सूक्ष्मता से बताई गई है। छोटे-छोटे प्राणियों की हिंसा से बचने का प्रयास करें।

प्राणियों की हिंसा न करना निःशस्त्रीकरण की बात हो जाती है।

परंतु शास्त्रकार ने युद्ध करने की बात भी कही है। आत्मयुद्ध की बात कही है। अपने आप से लड़ो। अपने आपसे लड़ना अध्यात्म की बात होती है। बाहर के युद्ध से हिंसा की बात हो जाती है। हमारे पास युद्ध के साधन के रूप में शरीर और आत्मा ये दो तत्त्व हैं।

असंख्य प्रदेश पिंड वाली द्रव्य आत्मा है। भाव आत्मा के रूप में कषाय आत्मा, उपयोग आदि सात आत्माएँ बताई गई हैं। हमें कषाय, अशुभ योग, मिथ्यादर्शन आदि असद् आत्माओं से लड़ना है। असद् से सद् की ओर बढ़ना, असद् का नाश करना, सद् का विकास करना आत्मयुद्ध है। लड़ने वाला भी ताकतवर होना चाहिए। मोहनीय कर्म हमारा शत्रु है। अनुप्रेक्षा, संकल्प-अभ्यास आदि शास्त्र हैं, इससे मोहनीय कर्म को जीता जा सकता है। प्रतिपक्ष भावना से पक्ष को जीतने का अभ्यास करना चाहिए।

ध्यान की साधना भी एक शस्त्र है। प्रेक्षाध्यान से आत्मा के विजातीय तत्त्वों को जीता जा सकता है। राग संसार का मार्ग है। हम राग-द्वेष को जीते। आत्मयुद्ध में संसार समुद्र से तरने की बात है। एक प्रसंग से समझाया कि जो तैरना जानता है, वह भव-सागर से पार हो सकता है। यही अध्यात्म विद्या है।

हमें मनुष्य जन्म मिला है। हम आत्मयुद्ध कर संसार सागर से तरने का प्रयास करें। यह काम्य है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि मनुष्यों में चक्रवर्ती प्रधान श्रेष्ठ होता है। देवताओं में इंद्र, पशुओं में सिंह और व्रतों में उपशम को श्रेष्ठ माना गया है। पर्वतों में सुमेरु पर्वत और जन्मों में मनुष्य जन्म सबसे महत्वपूर्ण एवं श्रेष्ठ है। मनुष्य जन्म प्राप्त करना दुर्लभ है। हमें सौभाग्य से जैन धर्म, तेरापंथ धर्मसंघ और आचार्यश्री महाश्रमण जी जैसे गुरु

प्राप्त हुए हैं, जो हमें भवसागर से पार करने का मार्ग बताते हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष सुरेश छाजेड़, सभा संरक्षक उपासक शंकरलाल पितलिया, खुशी चावत, हीर छाजेड़, अभिनंदन छाजेड़, प्रेक्षा पितलिया, अर्हम छाजेड़, विपिन पितलिया, तेरापंथ महिला मंडल से हिना, कन्या मंडल, स्थानकवासी समाज से विनोद सूर्या, मूर्तिपूजक समाज से जीतेंद्रभाई मेहता, दिगंबर समाज से परेशभाई मेहता राज्यसभा सांसद रमिला बेन बारां, हरिहर पाठक प्रेक्षाध्यान से नटुभाई पटेल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने कंठस्थ महाश्रमण अष्टकम व छः लेश्याओं पर लघु नाटिका की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी द्वारा किया गया।

विशुद्ध और प्रेममय भक्ति से हो सकते हैं भगवान के साक्षात् दर्शन : आचार्यश्री महाश्रमण

अगिया ग्राम, २२ फरवरी, २०२३

भवसागर तारक आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः १५ किलोमीटर विहार कर खेड़ब्रह्मा समाज द्वारा संचालित मॉडल रेजिडेंशियल स्कूल अगिया में पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए युगदृष्टा ने फरमाया कि भक्ति एक तत्त्व है और अध्यात्म का एक प्रयोग भी है। णमो शब्द का नवकार मंत्र में पाँच बार प्रयोग हुआ है। इसमें पाँच पारमार्थिक शक्तियों को नमन किया गया है।

चौबीस तीर्थंकरों को नमस्कार किया गया है—ऋषभ से लेकर भगवान महावीर तक। लोगस्स-उक्कीतं में प्रत्येक तीर्थंकर का नाम लेकर चौबीस तीर्थंकरों को वंदन किया गया है। अतीत में जो तीर्थंकर हो गए हैं, वे भी वंदनीय हैं, वर्तमान में जो महाविदेह में सीमंधर स्वामी आदि भी वंदनीय है। अनंत शक्ति संपन्न और परम अर्हता संपन्न, चार घनघाती कर्मों को जिन्होंने क्षय कर दिया है, वे पुरुष रत्न व सिद्ध आत्माएँ वंदनीय हैं।

नवकार मंत्र में अर्हत को सबसे पहले नमस्कार किया गया है। बाद में सिद्धों, आचार्यों, उपाध्यायों और सब साधुओं को नमस्कार किया गया है। ये पाँचों अध्यात्म से ओत-प्रोत आत्माएँ हैं। अर्हत और सिद्ध तो वीतराग ही होते हैं और आचार्य तीर्थंकर के प्रतिनिधि होते हैं।

नवकार मंत्र एक भक्ति का प्रयोग एवं मंत्र है और बड़ा निर्मल-विशुद्ध, आध्यात्मिक पाठ है। जो आगम वाङ्मय में भी हमें पढ़ने को मिलता है। भक्ति में अहंकार न हो।

समर्पण है, तो समर्पण निःशर्त हो तो वह उच्च कोटि का समर्पण है। आचार्यप्रवर ने एक प्रसंग से समझाया कि विशुद्ध भक्ति में प्रेम होता है तो भगवान साक्षात् दर्शन दे सकते हैं। भक्ति के कई स्तर हो सकते हैं। अंतर में भक्ति का भाव हो। श्रावक अर्हन्नक का उदाहरण हमारे सामने है। शरीर जाए तो जाए पर धर्म को तो नहीं छोड़ेंगा। धर्म कोई कपड़ा नहीं है, जो कभी भी उतार दें। श्रावकत्व तो दृढ़धर्मी जैसा होता है।

साधु हो या श्रावक दोनों रत्नों की मालाएँ हैं। धर्म को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। धर्म के प्रति भक्ति जीवनी शक्ति होती है। धर्म के शासन, धर्म की आज्ञा को नहीं छोड़ना, यह श्रद्धा बलवती हो।

साधु के महाव्रत अमूल्य हीरे हैं। साधु इनकी सुरक्षा करें।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार द्वारा किया गया।

संगठन यात्रा के विविध आयोजन

गांधीनगर

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन, गांधीनगर में संगठन यात्रा आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। प्रज्ञा संगीत सुधा द्वारा मंगलाचरण किया गया। स्वागत वक्तव्य प्रदीप चोपड़ा द्वारा किया गया। तेयुप, बैंगलुरु की सभी गतिविधियों से अवगत कराया। सभी अभातेयुप से पधारे साथियों का जैन पट्ट से स्वागत किया गया। विनोद कोठारी ने वर्ष २०२२-२३ में तेयुप बैंगलुरु द्वारा संपादित सभी कार्यों की संक्षिप्त जानकारी दी।

अभातेयुप एमबीडीडी कर्नाटक प्रभारी अमित दक ने कहा कि तेयुप, बैंगलुरु बहुत सराहनीय कार्य कर रही है। अभातेयुप से युवादृष्टि एवं सरगम के दक्षिण प्रभारी महावीर टेबा ने कहा कि सरगम में ज्यादा से ज्यादा प्रतिभागी भाग लें। युवादृष्टि का ज्यादा से ज्यादा सदस्य बनें। अभातेयुप से टीटीएफ के प्रभारी पवन नौलखा ने वक्तव्य दिया।

अभातेयुप से राष्ट्रीय नेत्रदान प्रभारी नवनीत मूथा ने कहा कि तेयुप कार्यकर्ताओं की खान है। अभातेयुप

के शाखा प्रभारी सोनू डागा ने अपनी प्रथम संगठन यात्रा में कहा कि परिषद के सदस्यों में आपसी परस्पर प्रेम और स्नेह रहना चाहिए और परिषद की प्रज्ञा संगीत सुधा की विशेष सराहना की। आगे कहा कि व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन भी करें। जैन संस्कारकों की संख्या बढ़ानी चाहिए। जिज्ञासा सत्र में नवनीत मूथा, प्रसन्न धोका, आलोक कुंडलिया, जितेंद्र कोचर, विक्रम दुगड़, सुधीर पोखरणा ने अपनी जिज्ञासा एवं सुझाव दिए। आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष पवन चोपड़ा ने दिया। मंच संचालन विनोद कोठारी ने किया। कार्यक्रम में अभातेयुप से शाखा प्रभारी सोनू डागा, एमबीडीडी कर्नाटक प्रभारी अमित दक, उपाध्यक्ष सुधीर पोखरणा, रमेश सालेचा, कोषाध्यक्ष पवन चोपड़ा एवं तेयुप सदस्य उपस्थित थे।

बड़ोदरा

तेयुप, बड़ोदरा के शाखा प्रभारी सूरत-उधना से मनीष दक अपने अभातेयुप साथी अमित गन्ना के साथ सार-संभाल हेतु बड़ोदरा पधारे।

साध्वी काव्यलता जी के दर्शन कर मंगलपाठ लेने के बाद सामूहिक

नवकार मंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की गई और उस क्रम में विजय गीत का संगान एवं श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। तेयुप अध्यक्ष पंकज बोल्या ने स्वागत भाषण दिया। मंत्री हितेश मेहनोत ने २०२२-२३ में तेयुप, बड़ोदरा द्वारा किए गए कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण दिया।

अभातेयुप सदस्य दीपक श्रीमाल ने तेयुप के सभी सदस्यों की जागरूकता और संघनिष्ठा के बारे में बताते हुए सदैव सभी कार्य करने में तत्पर रहने का आश्वासन दिलाया।

अमित गन्ना ने व्यक्तित्व विकास कार्यशाला पर जोर देते हुए निवेदन किया कि बड़ोदरा परिषद जो तीन बार सीपीएस क्लास करा चुकी है उन्हें अवश्य रूप से पर्सनेलिटी डेवलपमेंट का कार्यक्रम करवाना चाहिए। शाखा प्रभारी ने अभातेयुप के सभी आयामों पर विस्तृत रूप से जानकारी दी। बड़ोदरा को एमबीडीडी एवं युवादृष्टि में अधिवेशन में मिले अवार्ड को लेकर सभी सदस्यों की सराहना की।

तेयुप के भंवरराज बड़ोला ने सभी का आभार ज्ञापित किया।



मोहनीय कर्म पर विजय प्राप्त कर महावीर बन सकते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

वडाली, २४ फरवरी, २०२३

जंगम तीर्थ आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः खेड़ब्रह्मा से १२ किलोमीटर का विहार कर वडाली तीर्थ क्षेत्र में पधारे। तीर्थकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में जय-पराजय की बात होती है। युद्ध होता है, कोई जीत जाता है, कोई हार जाता है। चुनाव में न्यायालय में भी ये जय-पराजय हो सकती है। ये हार और विजय की बात है।

एक युद्ध में एक योद्धा शत्रु सेना के दस लाख योद्धाओं को जीत लेता है, वह जय है, विजय है, परंतु परम विजय नहीं है। परमजय पर शास्त्रकार ने कहा कि जो अपनी आत्मा को जीत लेता है, वह परम जय हो जाता है। स्वयं को जीतना परम जय की बात होती है।

खुद की आत्मा को जीतना कठिन कार्य होता है। जो आदमी कठिन कार्य करने वाला होता है, अच्छे संदर्भों में वह बड़ा होता है। यह एक प्रसंग से समझाया गया। कठिन काम करने का उत्साह होना विशेष बात होती है। सहन करना कठिन काम है। गाली देना, गुस्सा करना, झूठ



बोलना सरल हो सकता है।

हम चिंतन कर सकते हैं कि विजेता बनना चाहेंगे या परम विजेता बनना चाहेंगे। हम सब परम विजेता बनने के पथ पर आगे बढ़ने का प्रयास करें। जो वीर पुरुष होते हैं, वे महान विधि पर समर्पित

हो जाते हैं। एक मार्ग होता है, एक राजमार्ग होता है। हम राजमार्ग पर आगे बढ़ें। राजमार्ग पर सावधानी से चलें और संयम रखें।

हमारे जीवन का पथ राजपथ बने। अध्यात्म के मार्ग पर मोहनीय कर्म के प्रति

जागरूकता होनी चाहिए। अपने मन को वश में करें। राग-द्वेषरूपी साम्राज्य को आत्मा से दूर कर आत्मा पर अपना साम्राज्य स्थापित करें। मन, वचन, शरीर और इंद्रियों को संयम कर लेने पर परम विजय पर गति हो सकती है। भगवान

महावीर ने अनेक जन्मों में साधना की थी तब परम विजयी बने थे।

मनुष्य जन्म हमें प्राप्त है। इस मनुष्य जन्म में हम परम विजय की साधना के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं। हमें जैन शासन अध्यात्म का मार्ग मिला है और आगे भी मिलता रहे भिक्षु शासन का साया मिलता रहे। चोट करने का मूल केंद्र मोहनीय कर्म है। इसका ज्ञान हो। हम तभी परम विजयी बन सकते हैं। मोहनीय कर्म को जीतने से ही परम जय की बात हो सकती है। हम भी महावीर बनने की दिशा में आगे बढ़ें। हम भी परमजयी बन जाएँ।

आज यहाँ तीर्थ में आए हैं। साधु, साध्वी, श्रावक-श्राविका भी चलता तीर्थ हैं। पूज्यप्रवर के स्वागत में वडाली तीर्थ ट्रस्ट से राजेशभाई मेहता, प्रवक्ता उपासक अशोकभाई उपासक शंकरलाल पितलिया, अंश छाजेड़, पुष्प छाजेड़, छाजेड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। छाजेड़ परिवार की बहनों एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने गीत प्रस्तुत।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

